जिला विद्यालय निरीक्षक
द्वारा स्वीकृत
स्टैण्डर्ड भूगोल
जिला
DONATION
सहारनपुर
9265

पुस्तक-विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

...डिरेक्टरी जिला सहारनपुर

लेखक
पद्मप्रकाश 'संतोष'
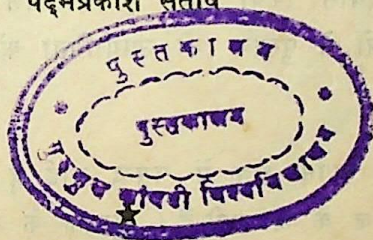
प्रकाशक
...गोर्धनदास धर्मदास, सहारनपुर

...धित संस्करण] [मूल्य ६२ नये पैसे

दो शब्द

भूगोल मानव जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। अपने चारों ओर अवलोकन कर ज्ञान-प्राप्ति की इच्छा, प्रकृति मनुष्य में बाल्यावस्था से ही उत्पन्न कर देती है। अतः भूगोल अध्ययन का श्रीगणेश अपने पास-पडौस एवं ग्राम और नगर से ही होता है।

प्रस्तुत पुस्तक में जिले सहारनपुर के विद्यार्थियों के लिये इस जिले का भूगोल सरल एवं सरस भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। जिले के अनेक प्रकार के मान चित्रों ने पुस्तक की उपयोगिता को और बहुत बढ़ा दिया है।

पुस्तक अपने क्षेत्र में पसन्द आई है जिसके लिये हम शिक्षण समाज के आभारी हैं। पुस्तक के अनेक संस्करण ही इसके साक्षी हैं। प्रस्तुत संस्करण में पुस्तक का संशोधन कर जिले के अनेक दर्शनीय स्थानों के तथा अन्य अनेक आवश्यक चित्र भी बढ़ा दिये गये हैं जिससे पुस्तक बहुत ही रोचक हो गई है।

—प्रकाशक

पहला पाठ

भूगोल की जानकारी

बच्चो ! जिस संसार में हम और तुम रहते हैं, वह नारंगी के समान गोल है। जिस प्रकार नारंगी के ऊपर और नीचे के भाग कुछ चपटे हैं, उसी प्रकार इस संसार के उत्तरी व दक्षिणी सिरे भी चपटे हैं। जैसे नारंगी का बाहरी
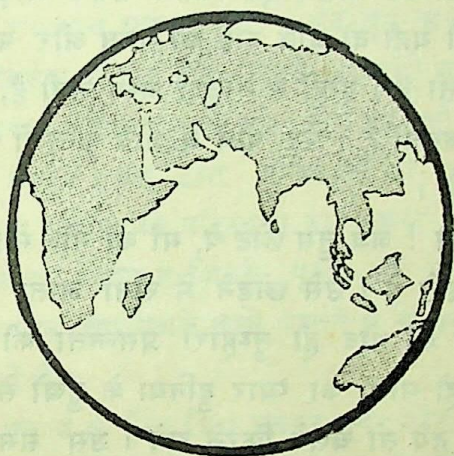
छिलका कहीं-कहीं उभरा हुआ दिखाई देता है, ठीक उसी प्रकार इस दुनिया की ऊपरी सतह भी ऊंची नीची है। इसमें कहीं बहुत ऊंचे पहाड़ है तो कहीं अथाह महासागर, कहीं रेगिस्तान हैं तो कहीं घने जंगल, कहीं नदियों ने पहाड़ियों को काट काट कर घाटियाँ बनादी हैं तो कहीं झरनों का मनोहारी दृश्य है।

इस प्रकार दुनिया के विभिन्न भागों की, जिसमें मैदा घाटियाँ, नदियाँ, तालाब, पहाड़, समुद्र, और रेगिस्तान जानकारी प्राप्त करना ही भूगोल कहलाता है।

किसी स्थान के भूगोल बनाने में वहाँ की जलवा बहुत सहायक होती है। जलवायु शब्द का अर्थ है उ स्थान पर वर्ष में किस समय कितनी वर्षा होती है, कित समय गर्मी का मौसम एवं कितने समय जाड़ा पड़ता है प्रकृति की यही दो बातें राई को पर्वत और पर्वत को रा बना सकती हैं। इन्हीं से नदियाँ जन्म लेती है, घाटियाँ इन्हीं से बनती है। पेड़ पौधे व जीव जन्तुओं के जन्मदात भी यहीं हैं।

बच्चो ! जब तुम छोटे थे, माँ की गोद में ही तुम सार सुख समझते थे। उसे छोड़ने में रोना आता था। क्यों हो, माता की गोद ही तुम्हारी प्रसन्नता की सीमा थी सचमुच ही माता का प्यार दुनिया के सुखों से बढ़कर है जरा बड़े हुये तो चलने फिरने लगे। उस समय देखा कि माता की गोद के अतिरिक्त भी कोई और संसार है। य हमारा घर है, यह हमारा आंगन है, यह कोठरी है, यह दरवाजा है। धीरे धीरे शक्ति आई, पास पड़ौस की सैर करने लगे। अपने मकान से दूसरे मकानों को जाने लगे दूसरों के मकान, खेत, पानी के नाले व जानवरों आदि की जानकारी होने लगी। ६ वर्ष की आयु में पड़ौस की पाठ

शाला में पढ़ने आये। दूसरे गाँव देखें, पाठशाला भवन देखा अपने साथ के बालकों से खेले, गाँव की अन्य बातों से जानकारी भी हुई। सड़क, पुल, नहर, तालाब, चौराहे, नदी, वृक्ष और सड़कों पर पत्थरों के निशानों का ज्ञान हुआ। आगे चलकर धान व गन्ने के खेत देखे। हर्ष हुआ कि हमारे पड़ौस में क्या क्या वस्तु उत्पन्न होती है।

इस प्रकार संसार की एक से एक बढ़कर चीजों को देखने का चाव उत्पन्न हुआ। अब तुम समझ गये होंगे कि बाल्यावस्था से अब तक तुमने कितनी बातें सीखली हैं। इस तरह आगे जब तुम बड़े होगे तो और भी जानकारी प्राप्त करोगे। बस इसी जानकारी को भूगोल कहते हैं। अब तुम भूगोल की परिभाषा इस प्रकार कर सकते हो कि भूगोल वह विद्या है जिससे पृथ्वी की बनावट, मनुष्य के रहन-सहन तथा उनके खाने कमाने के साधनों की जानकारी मिलती है।

मनुष्य के लिए जिस प्रकार हवा और पानी और खाने पीने की वस्तुयें जरूरी हैं उसी प्रकार उसे भूगोल की जानकारी प्राप्त करना भी आवश्यक है।

अभ्यास के प्रश्न

१ - भूगोल किसे कहते हैं ?
२—भूगोल की आवश्यकता क्यों होती है ?

दूसरा पाठ

भूगोल सीखने की विधि

हम आरम्भ में ही बता चुके है कि भूगोल वह विद्या है जो हमें बताये कि किसी जगह को जलवायु कैसो है, भूमि कैसी है, वहाँ मनुष्य किस प्रकार रहते हैं, उनके खाने कमाने के साधन क्या हैं ? ये सब बातें हमको निम्नलिखित दो प्रकार से ज्ञात हो सकती हैं ।

पहली विधि—दूसरे गाँवों, कस्बों और नगरों में जाना, वहाँ प्रत्येक वस्तु को देखना, ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त करना और यह जानना कि वहाँ क्या धन्धे होते हैं दस्तकारी की क्या वस्तुयें बनती हैं, किस चीज की खेती होती है । बच्चों के पढ़ने के लिए पाठशालायें किस कक्षा तक हैं, दर्शनीय स्थान कौन से हैं, कोई प्राचीन मंदिर कोई पुरानी मस्जिद, कोई सुन्दर गिरजा, कोई शानदार पुल, कोई पक्की इमारत है कि नहीं है ? वर्षा कैसी होती है, सर्दी कैसी और गर्मी कैसी होती है ? इन बातों को देखने से और उन पर विचार करने से भूगोल का ज्ञान आंखों देखा होता है ।

दूसरी विधि—पहली विधि से ज्ञान प्राप्त करने में बहुत खर्चा और समय लगता है । इसलिये प्रत्येक मनुष्य इस विधि से काम नहीं ले सकता और दूसरी विधि बहुत ही

सरल है। जहाँ के भूगोल की जानकारी करनी हो वहाँ के भूगोल की पुस्तक को ध्यान से पढ़ो, उसके चित्रों को ध्यान से देखो। कक्षा में जो बातें गुरु जी बतलायें उनको ध्यान पूर्वक सुनो, पढ़ी हुई बात को नक्शे में देखो, इसी से तुमको भौगोलिक ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

इन दो विधियों के अतिरिक्त भूगोल की बहुत सी बातें हम नगरों और देशों की कहानियाँ पढ़कर भी जान सकते हैं, इससे वहाँ के निवासियों के रहन-सहन आदि के सम्बन्ध में जाना जा सकता है।

अभ्यास के प्रश्न

१—भूगोल किसे कहते हैं, ? उसकी क्या आवश्यकता है ?

२—भूगोल का आँखों देखा, ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता है ?

३—भूगोल सीखने के लिये नक्शा देखना क्यों आवश्यक है ?

४—दूसरे देशों की कहानियाँ पढ़ने से क्या लाभ होता है ?

तीसरा पाठ

कुछ आवश्यक बातें

जिले का भूगोल सीखने से पूर्व कुछ छोटी बातों का जानना आवश्यक है। आओ जाने, वे क्या है ?

गाँव—उस छोटी बस्ती को कहते हैं जिसमें कुछ कच्चे मकान और कच्ची झोपड़ियाँ हों, जिसमें मजदूर और किसान लोग रहते हों। ढोर-डंगर पालकर तथा खेती बाड़ी करके अपना जीवन निर्वाह करते हों।

गाँव का दृश्य

कस्बा—गाँव से उस बड़ी बस्ती को कहते हैं जहाँ मकान और गली कूचे कच्चे भी होते हैं और पक्के भी। कस्बे में छोटा सा बाजार होता है एक आध मन्दिर, मस्जिद और स्कूल भी होते हैं।

शहर—कस्बे से बड़ी बस्ती को कहते हैं। इनमें पक्के मकान और बड़े बाजार होते हैं। गली-कूचों में नालियाँ

बनी होती हैं। सब जगह सफाई और रोशनी का प्रबन्ध होता है। स्कूल- कचहरियाँ, शफाखाने, सिनेमाघर और डाकखाने आदि भी होते हैं।

थाना—जनता की रक्षा के लिये कई एक गाँवों पर उसके पास के कस्बे में थाना होता है। इसमें एक थानेदार और कुछ सिपाही रहते हैं। उनका कर्तव्य उन गाँवों की देखभाल करना होता है।

परगना—कई एक गाँव को मिलाकर बनता है। इस का अधिकारी कानूनगो होता है।

तहसील—कई परगने मिलाकर तहसील बनती है। इसका मुख्य अधिकारी तहसीलदार होता है।

ज़िला—कई तहसीलों को मिलाकर जिला बनता है। इसके सबसे बड़े अधिकारी को जिलाधीश (कलक्टर) कहते है। वह पूरे जिले का प्रबन्ध करता है।

ज़िले का भूगोल जानने के लिये अनेक बातों की जानकारी प्राप्त करनी होगी। तुम जिस जिले के रहने वाले हो उसमें कितनी तहसीलें, परगने, थाने, शफाखाने, कालिज, स्कूल, और कितने प्रसिद्ध स्थान हैं।

तुम्हारा जिला सहारनपुर है। अब देखें हमारे जिले का भूगोल क्या है?

अभ्यास के प्रश्न

१—गाँव किसको कहते हैं ?
२—शहर किसको कहते हैं ?
३—शहरों में क्या क्या प्रबन्ध होता है ?
४—थानेदार किसको कहते हैं ?
५—जिले का प्रमुख अधिकारी कौन होता है ?

चौथा पाठ

ज़िले सहारनपुर की सीमा

बालको ! अपने मकान की सीमा बतलाओ कि पूरब में किसका मकान है, पश्चिम में क्या है, उत्तर में कौनसा मार्ग, मकान या दुकान है तथा दक्षिण में क्या है ?

इसी प्रकार अपने गाँव या शहर के चारों ओर क्या क्या है? इसकी जानकारी प्राप्त करना ही उसकी सीमा है। प्रत्येक स्थान का भूगोल जानने के लिये सीमा की जानकारी आवश्यक है। इसलिये जब तुम अपने जिले का भूगोल पढ़ रहे हो तुम्हारे लिये सबसे पहले जिले की सीमा का जानना आवश्यक है। आओ, अब तुमको जिले सहारनपुर की सीमा बतायें।

जिले सहारनपुर की सीमा—उत्तर में शिवालिक पर्वत जिसके दूसरी ओर ज़िला देहरादून है।। दक्षिण में जिला

मुजफ्फरनगर है। पूरब में गंगा नदी है, जिसके दूसरी ओर जिला बिजनौर है। पश्चिम में यमुना नदी है जिसके दूसरी ओर जिला अम्बाला व करनाल हैं।

लम्बाई चौड़ाई—जिले सहारनपुर की तीन सीमा प्राकृतिक हैं। एक ओर पहाड़, दूसरी ओर गंगा नदी और तीसरी ओर यमुना नदी है। इसकी लम्बाई ६५ मील और चौड़ाई ५६ मील के लगभग है।

अभ्यास के प्रश्न

१—अपने मकान, गाँव और कमरे की सीमा बताओ।

२—ज़िले सहारनपुर की सीमा बताओ।

३—इस ज़िले के किस ओर नदी और किस ओर पहाड़ हैं?

४—इस ज़िले की लम्बाई चौड़ाई कितनी है?

पांचवाँ पाठ

प्राकृतिक स्थिति

बच्चो! तुम्हारे गांव, कस्बे या नगर में जहां के तुम निवासी हो, वहाँ कहीं भूमि रेतीली है, कहीं चिकनी मिट्टी है, कहीं दोनों का मेल है, भूमि कहीं ऊँची है और कहीं नीची, कहीं जंगल है, कहीं मैदान, कहीं नदी है, कहीं पर्वत, कहीं हरियाली है और कहीं उजाड़ भूमि है। इसको भूमि की प्राकृतिक आकृति कहते हैं।

नक्शा देखने से मालूम होगा कि जिले की दो बड़ी नदियाँ गंगा और यमुना उत्तर से दक्षिण को बहती हैं। इसलिये जिले का ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है।

प्राकृतिक दृष्टि से इस जिले को ६ भागों में विभाजित किया गया है:—

(१) पहाड़ी भाग—शिवालिक पर्वत पूरब से पश्चिम तक उत्तरी सीमा बनाता है।

(२) जंगली भाग—खोल, मोहंड, खारा, टिम्ली, शाकुम्बरीदेवी और कांस के जंगल हैं। इन जंगलों में साल के वृक्ष, भाभड़ और बांस बहुत अधिक होते हैं। कुछ लकड़ी इमारती कामों में आती है। इन जंगलों में शेर, चीते और हाथी जैसे जानवर भी पाये जाते हैं। ज्वालापुर से लकसर तक कई मील लम्बा चौड़ा पथरी का जंगल है।

(३) खादर—जब गंगा और यमुना में बाढ़ आ जाती है तो पानी इधर उधर दूर तक फैल जाता है, पानी उतर जाने पर वहाँ झाऊ, कांस और कई प्रकार की घास पैदा हो जाती है, उसी को खादर कहते है। यह खादर कई मील लम्बे और चौड़े हैं। इनमें कहीं-कहीं गाँव बस जाते हैं जो फिर बरसात आ जाने पर नष्ट हो जाते हैं, जिनको बेला कहते हैं।

(४) घाड़—गंगा और यमुना नदियों के बीच में दस बारह मील चौड़ा भाग ऐसा है जहाँ रेत और मिट्टी ने
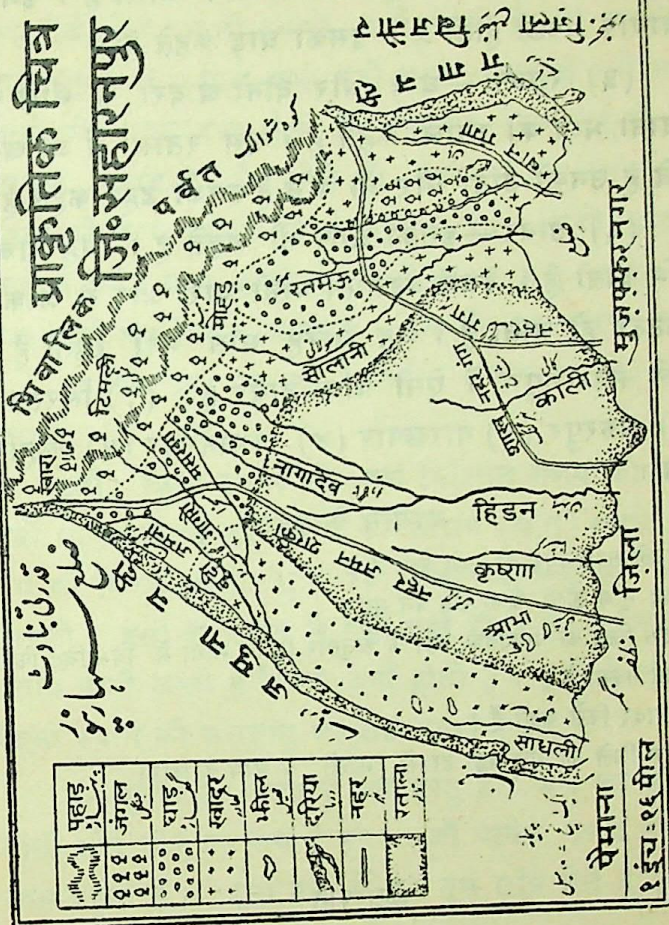
एक मोटी तह बनाई है जिसका रंग काला है। इनमें पैदावार अच्छी होती है। इसको घाड़ कहते हैं।

(५) रताला—घाड़ और दोनों खादरों के नीचे के मैदानी भाग को रताला कहते हैं। इस रताला में जो खेत ऊँचे हैं उनको डांडा और जो नीचे हैं उनको डहर कहते हैं।

(६) डाबर—इसको झोल भी कहते है। यह नीची भूमि होती है। इसमें बरसाती पानी चारों ओर से आकर इकट्ठा हो जाता है। यह बारह मास भरी रहती है। जिले सहारनपुर में ऐसी पाँच डाबर हैं (१) सिरसका (२) सरुरपुर (३) गोरछपार (४) अम्बानेनपुर (५) कुम्हार हेड़ा।

अभ्यास के प्रश्न

१—जिले सहारनपुर की भूमि कैसी है ?

२—यह भूमि ऊंची नीची कैसे बन गई ?

३—इस जिले को प्राकृतिक दशा के अनुसार कितने भागों में विभाजित किया जा सकता है ?

४—खादर किसे कहते हैं ?

५—इस जिले की पांच बड़ी डाबरों (झीलों) के नाम बताओ।

छटा पाठ

जलवायु

बालको, क्या कारण है कि कभी तुम्हारी पाठशाला प्रातः साढे छः बजे खुलकर दोपहर को ग्यारह बजे बन्द

हो जाती है तो कभी दस बजे खुलकर शाम को चार बजे बन्द होती है ? कभी हमको गर्मी लगती है तो बारीक कपड़े पहनते हैं। फिर कभी सर्दी लगने लगती है तो गर्म कपड़ों की आवश्यकता होती है। ऊन का स्वेटर पहनते हैं, गुलबन्द लगाते हैं और मौजे भी पहनते हैं। कभी ऐसे कपड़ों को धारण करते हो जो हवा में उड़ें। कभी बादल उठते हैं और वर्षा होती है, कभी बादल उड़ जाता है, कड़ाके की धूप निकल आती है। इस भेद का कारण क्या है ? जानते हो, बालको ! नहीं, अच्छा आओ, हम बतायें।

सुनो, किसी स्थान की एक निश्चित् समय की गर्मी सर्दी और बरसात की अवधि को मौसम (ऋतु) कहते हैं। सूर्य की किरणें कभी भूमि पर सीधी पड़ती हैं तो कभी तिरछी। इसी के प्रभाव से गर्मी-सर्दी होती है। समुद्र से हवायें पानी लाती हैं जिनसे वर्षा होती है। इसी से हमको किसी स्थान की जलवायु का ज्ञान प्राप्त होता है।

तुम पूछोगे कि जलवायु क्या वस्तु है ? जल का अर्थ है पानी और वायु का अर्थ है हवा। जो प्रत्येक समय तुम्हारे साथ रहती है। इसी हवा में हम तुम साँस लेते हैं। यह न हो तो हम घुटकर मर जायें।

इसी कारण किसी स्थान की जलवायु का यह अभिप्राय है कि वहाँ गर्मी कितनी होती है, सर्दी कितनी है और वर्षा

कितनी होती है। इन तीनों में जो अधिक होगी उसका प्रभाव जलवायु पर होगा। गर्मी में गर्म, सर्दियों में सर्द और बरसात में नमींदार जलवायु होगी। प्रमुख तीन ऋतुयें होती हैं, गर्मी, बरसात और जाड़ा।

गर्मियों में अधिक गर्मी पड़ती है। गर्म ऋतु अप्रैल से जून तक रहती है, पछवा हवायें चलती हैं। बरसात जुलाई से आरम्भ होकर अक्तूबर तक रहती है। पूर्वी हवायें चलती हैं, जिससे वर्षा होती है। जाड़ा नवम्बर से मार्च तक रहता है।

शिवालिक पर्वत समीप होने से बरसात में गंगा और यमुना के खादर में नमीं रहती है।

अभ्यास के प्रश्न

१—ऋतु (मौसम) का क्या अर्थ है ?
२—तुम्हारे जिले में कितनी ऋतुयें होती हैं ?
३—आमतौर पर जिले की जलवायु कैसी है ?
४—जाड़ा कौनसे मास से आरम्भ होता है ?
५—वर्षा ऋतु में कैसी हवायें चलती हैं ?

सातवाँ पाठ

उपज

तुम्हारे गाँव में क्या पैदा होता है ? दालें कहां से आती हैं ? चादर, लिहाफ, बिछौने कहां से आते हैं ? इनकी जानकारी प्राप्त करना ही वहां की उपज का ज्ञान

है । कुछ वस्तुयें ग्राम में मिल जाती हैं । गाँव में मक्का, धान, जौ, चना, गेहूँ, ज्वार, बाजरा और गन्ने की पैदावार होती है । उड़द, मूंग, मोठ, मसूर से दालें बनती हैं । कपास भी पैदा होती है, जिसको ओटने से रुई निकलती है। रूई कातकर सूत बनाते हैं । सूत से जुलाहे कपड़ा बुनते हैं, उसे रंगवा कर छपवाते हैं, जिसके लिहाफ और बिछौने बनते हैं ।

यह वस्तुयें कब और कैसे पैदा होती हैं ? उपज का आधार जलवायु है । जब खेतों में नमीं होती है उनको अच्छी प्रकार जोतकर बीज बोया जाता है, जम जाने पर आवश्यकतानुसार पानी दिया जाता है । अधिक वर्षा से पैदावार गल जाती है और अधिक खुश्की से सूख जाती है। ठीक समय पर पानी मिलने और ऋतु के अनुकूल होने से ही उपज अच्छी हो सकती है । भूमि की दशा और खाद भी उपज में सहायक होते हैं । इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं कीड़ा न लग जाये, पाला न फूंक दे । चतुर किसान इन सब बातों को जानते हैं । प्रत्येक वस्तु को ऋतु के अनुसार बोते हैं । न सर्दी में धान बोते हैं और न बरसात में गेहूँ ।

अब तुम उपज के विषय में कुछ सीख गये होगे । हमारे जिले में तीन फसलें होती हैं ।

(१) सावनी (२) साढ़ी (३) अतिरिक्त ।

उत्तर प्रदेश
उपज गेहूँ
संकेत
अधिक उपज
कम उपज
बहुत कम उपज
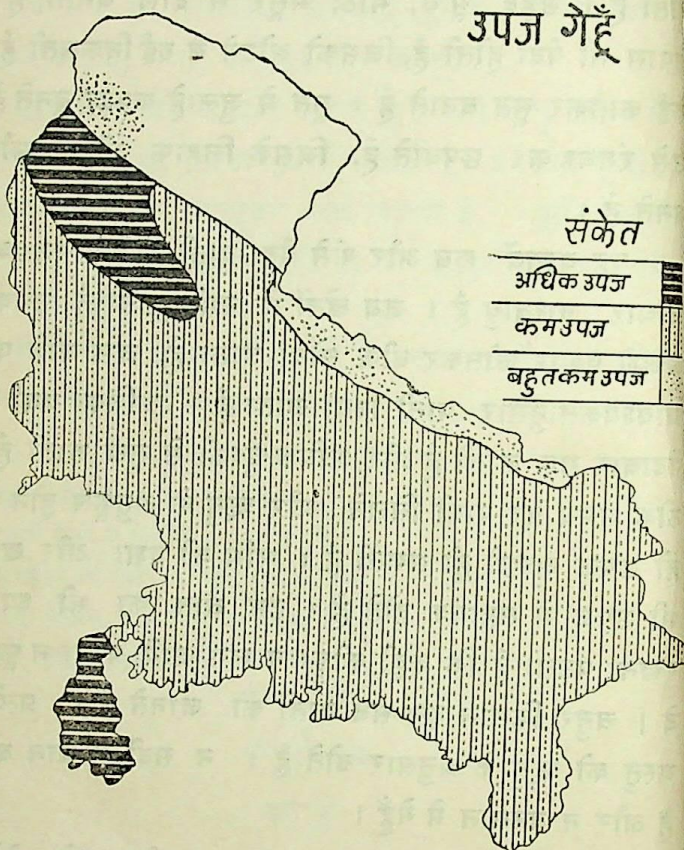
सावनी की उपज—वह फसलें जो आषाढ़, श्रावण अर्थात् जून और जुलाई में बोई जाती हैं। जैसे मक्का, ज्वार, बाजरा, मोठ, उरद, तिल, लोभिया, सन, ग्वार, मिर्च, धान और कपास आदि। गन्ना फरवरी और मार्च में बोया जाता है जो सावनी की फसल में सम्मिलित है। तैयार होने के लिये गन्ना दूसरी फसलों से अधिक समय लेता है।

साढ़ी की उपज—जो वस्तुएँ अक्तूबर और नवम्बर में बोई जाती हैं, वह साढ़ी की उपज हैं। जैसे गेहूँ, चना, जौ, मसूर, मटर, अलसी, सरसों, लोभिया, हल्दी और तम्बाकू इत्यादि। गेहूँ की उपज दक्षिणी पूर्वी भाग में अधिक होती है। शेष वस्तुयें थोड़ी या अधिक प्रत्येक स्थान में होती है। सलहरी भी हमारे जिले में अधिक होती है यह अज-वायन की एक किस्म है, जो अधिक मूल्यवान होती है। इसकी खेती थोड़े समय से ही होने लगी है। भारतीय यह नहीं जानते कि इसका क्या होता है। विदेशों वाले इस वस्तु से न जाने क्या बनाते हैं जो इसके खरीदार हैं। लहसुन और प्याज भी साढ़ी की उपज है।

अतिरिक्त फसल की उपज तरबूज, खरबूजा, लौकी, खीरा, कद्दू, करेला, तोरी आदि हैं। तरबूज सोलानी नदी के खादर में अधिक होता है। खरबूजा यमुना के खादर में अधिक मात्रा में उत्पन्न होता है। पटहेड़ का खरबूजा प्रसिद्ध है। यह बहुत उम्दा व मीठा होता है। सहारनपुर का छोटा खीरा भी प्रसिद्ध है।

तालाबों की उपज—जिला सहारनपुर के तालाब तथा डाबर की उपज सिंघाड़ा, कमलगट्टा और भिस है इनकी बेलें पानी में फैलती हैं।

बागों की उपज—हमारे जिले में बागों की अधिकता है। इसी कारण बागों की उपज भी अधिक होती है आम सहारनपुर, अम्बहटा और रामपुर के प्रसिद्ध हैं, केला बेहट और मंगलौर का तथा लीची और लौकाट सहारनपुर के प्रसिद्ध हैं जो बहुत मीठे होते हैं।

जंगल की उपज—इस जिले में घाड़ से इमारती लकड़ी, जलाने की लकड़ी, भाभड़, पूला और बांस प्राप्त होते हैं। शहद, गोंद और लाख भी यहाँ पैदा होता है हमारे जिले के जंगलों में शेर और चीते भी पाते जाते हैं।

खान की उपज—जिले सहारनपुर में धातु की कोई खान नहीं है। केवल पहाड़ी भाग से पत्थर और कंकर निकलता है, जो चूना बनाने और सड़कों पर बिछाने के काम आता है।

सहारनपुर का सफेद पौंडा प्रसिद्ध हैं, जो दूर दूर जाता हैं। लौकाट व आम तथा बासमती चावल भी बहुत होता है। मिर्च तहसील नकुड़ के दक्षिणी भाग में अधिक होती है शेष सभी वस्तुयें थोड़े या अधिक जिले के प्रत्येक स्थान में उत्पन्न होती है।

अभ्यास के प्रश्न

१—किसी स्थान की उपज से जलवायु का क्या सम्बन्ध है ?
२—हमारे ज़िले में कितनी फसलें बोई जाती हैं ? उनके नाम बताओ।
३—श्रावणी (सावनी) की उपज के नाम बताओ।
४—(डाबर) और तालाबों में क्या उत्पन्न होता है ?
५—हमारे जिले में खान की क्या उपज है ?

आठवाँ पाठ

जन-संख्या और उद्योग धन्धे

किसी स्थान के स्त्री, पुरुष, बच्चों और बूढ़ों की गिनती को ही वहाँ की जन संख्या अथवा आबादी कहते हैं। छोटे ग्रामों की जनगणना में तो कोई कठिनाई नहीं है किन्तु बड़े बड़े गाँवों, कस्बों और नगरों की जनगणना कठिन होती है। इसके लिये सरकार प्रति दस वर्ष बाद जनगणना करती है। हजारों व्यक्ति जनगणना का कार्य करते हैं दूसरे इससे देश की जन-संखया की घटत बढ़त का ज्ञान रहता है। १९५१ में हमारे जिले की जनसंखया १३,५३,६८८ थी। जो १९६१ में १६ लाख के लगभग होगई है। जिले सहारनपुर में लगभग २००० गाँव और कस्बे हैं।

उद्योग धन्धे अनेक प्रकार के होते है। जैसे, किसान खेती करता है, लोहार लोहे का सामान बनाता है।

जुलाहा कपड़ा बुनता है, धोबी कपड़े धोता है, कुम्हार बर्तन बनाता है, मोची जूते और बढ़ई लकड़ी का सामान बनाते हैं, ग्वाला गाय पालता है और भड़भूजा चने भूनने का काम करता है। सभी उद्योग धंधों वाले अपनी जरूरत
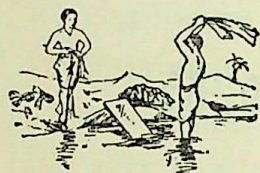
विभिन्न उद्योग धन्धे

की चीज़ अपने पास रखकर बाकी को बाज़ार में जाकर बेच देते हैं और अपनी जरूरत की दूसरी चीजे खरीद कर लेते है। इस बेचने और खरीदने के धन्धे को व्यापार कहते हैं।

व्यापार करने के लिये गांवों में एकाध छोटी दुकान होती है। बड़े बड़े गांवों में पेंठ लगती है जिसमें आस पास के दुकानदार तरह तरह की चीज़ों को बेचने वाले दुकानदार और किसान लोग अपनी उपज की चीज़ों को बेचते तथा जरूरत की चीजें खरीदते हैं। नगरों में बड़े बड़े बाज़ार होते जहाँ हर एक तरह की चीजें बिकती हैं कुछ बाजारों में उस

इलाके की खास खास उपज की चीजें बिकने आती है। इन बाजारों को मण्डिया भी कहते हैं। जिले सहारनपुर में कुछ निम्न प्रसिद्ध मंडिया हैं।

व्यापारिक मण्डियाँ

सहारनपुर—अनाज गुड़ शक्कर खाँड और चावल की मण्डी है। बासमती चावल दिसावर को जाता है। कागज, चीनी और सिगरेट कपड़ा बनाने की मिले हैं। ये चीजें यहाँ से बनकर दूर-दूर जाती हैं। लकड़ी पर बेल बूटे की खुदाई के काम की चीजें बनती हैं। मौजे और बनियान भी तैयार होते हैं।

गंगोह—गेहूं और घी की प्रसिद्ध मण्डी है।

अम्बहटा—घी की मण्डी हैं।

रुड़की—अनाज, गुड़ और शक्कर की मण्डी है। लोहे का सामान भी अच्छा बनता है।

संसारपुर—भाभड़ और लकड़ी का कोयला अधिक मात्रा में बनाया जाता है।

जड़ौदा—गुड़, शक्कर की मण्डी है।

आभानैनपुर—बांसमती चावल और पौंड़े की शक्कर की मण्डी है।

देवबन्द—शूगर मिल है। गाढ़ा अच्छा तैयार होता है। दुतई भी बुनी जाती हैं।

नकुड़, कैलाशपुर—कुओं के रहट उम्दा और मजबूत बनते हैं।

भगवानपुर—पेड़े प्रसिद्ध हैं, कपड़े की छपाई का काम बढ़िया होता है।

बहादराबाद, पथरी, मुहम्मदपुर—पानी से बिजली तैयार होती है। जस्ती तार से दूर-दूर भेजी जाती है।

ज्वालापुर—शक्कर बनती है। बाँस की छड़ियाँ और डण्डों इत्यादि का काम होता है।

मंगलौर—बाँस का काम होता है। केला खूब होता है। कुर्सियाँ अच्छी बनती है।

दुमझेड़ा—किश्तियाँ तैयार होती हैं।

जिले से बाहर जाने वाली वस्तुयें

चावल, रुई, गेहूँ, लकड़ी की खुदाई की वस्तुयें (संदूकचे आदि), आम, लौकाट, लीची, खीरा, सफेद पौंड़ा, अमरूद, कागज, सिग्रेट, खांड, गोंद, गत्ता, लाख, शहद, कपड़ा आदि।

जिले में बाहर से आने वाली वस्तुयें

मिट्टी का तेल, बर्तन, पुस्तकें, दियासलाई, सूती व ऊनी कपड़ा, मशीनें दवायें, मसाले, स्टेशनरी, पान व औजार आदि।

अभ्यास के प्रश्न

—जिले सहारनपुर की जनसंख्या कितनी है ?

—जिले के उद्योग धन्धे क्या हैं ?

—व्यापार किसको कहते हैं ? इस जिले में व्यापारिक मंडियाँ कौन-कौन सी हैं ?

नवाँ पाठ

नदियाँ और दरिया

बच्चो ! नदियाँ पर्वतों से निकलकर मैदानों में बहती हैं। यह जिधर को ढाल होता है उधर ही को बह निकलती हैं। प्रकृति ने पर्वतों पर बर्फ गलाकर भूमि पर पानी बहा कर नदियों का निर्माण किया है।

हमारे जिले में कई नदियां हैं। हमारे जिले में दो बड़ी नदियां और सोलह छोटी नदियाँ है। निम्न मुख्य हैः—

(१) गंगा—यह नदी हिमालय पर्वत के गंगोत्री नामक स्थान से निकलकर हिमालय और शिवालिक की चट्टानों को काटती हुई हरिद्वार में मैदानों में आती है। हमारे जिले के हरिद्वार और कनखल से होती हुई जिले मुजफ्फरनगर की ओर चली गई है। इसका जल अत्यन्त मीठा, स्वच्छ, सुन्दर और निरोगी है। इसका जल स्वच्छ बर्तन में रक्खा

वर्षों तक खराब नहीं होता। हिन्दु इस नदी का बहुत आदर करते हैं और मरे हुए शव को राख इसमें बहाना अपना मुख्य कार्य समझते हैं। हरिद्वार में लाखों यात्री इसमें स्नान करने आते हैं।

(२) यमुना—यह नदी यमुनोत्री पर्वत से निकलती है और शिवालिक की चट्टानों को काटती हुई आकर जिला सहारनपुर की पश्चिमी सीमा बनाती है। इसके किनारे पर बादशाही बाग, फैजाबाद, इस्लामनगर, टाबर और सहसपुर जट आबाद है। हिन्दू लोग इसको भी गंगा की भाँति पवित्र नदी समझते हैं।

(३) बान गंगा—इसको बूढ़ी गंगा भी कहते हैं। यह गंगा के खादर से निकलती हैं और ज्वालापुर में बहती हुई जिला मुजफ्फरनगर में चली जाती है। इसके किनारे पर कटारपुर, सुल्तानपुर, भोगपुर और दराजपुर आबाद हैं।

(४) सोलानी—शिवालिक पर्वत से निकलकर इस जिले में बहती हुई जिले मुजफ्फरनगर को चली गई है रतमऊ नदी भी इसमें मिल जाती है। रुड़की में इस नदी पर नहर गंगा का पुल बना हुआ है जो देखने योग्य है।

(५) बूढ़ी यमुना—यह नदी भी शिवालिक पर्वत से निकलकर परगने सहारनपुर में यमुना नदी से मिल जाती है।

(६) रतमऊ नदी—इसको धनौरी भी कहते हैं। यह शिवालिक पर्वत से निकलकर भगवानपुर, रुड़की और

मंगलौर के परगनों में बहती हुई सोलानी नदी में मिल जाती है।

(७) पथरी नदी—यह शिवालिक पर्वत से निकलकर ज्वालापुर, रुड़की और मंगलौर के परगनों में होती हुई दुर्गापुर के निकट बानगंगा में मिल जाती है।

(८) गंगा रौ—यह नदी शिवालिक पर्वत से निकलकर फैजाबाद और सुल्तानपुर के परगनों में होती हुई यमुना में मिल जाती है।

(९) मसखरा रौ—यह शिवालिक पर्वत से निकलती है और मुज़फ्फराबाद, फैजाबाद, सुल्तानपुर के परगनों में होती हुई गंगा रौ में मिल जाती है। इस नदी के किनारे पर इस जिले का मुख्य शाकुम्बरी देवी का मेला प्रतिवर्ष बड़ी धूमधाम से होता है।

(१०) हिन्डन नदी—यह नदी शिवालिक से निकल कर बरसाती नदियों नागादेव, ढमोला, और छच्छी रौ का पानी लेकर मुजफ्फराबाद, सहारनपुर, नागल और देवबन्द को बहती हुई जिला मुजफ्फरनगर को चली गई है।

(११) ढमोला—यह नदी शिवालिक पर्वत से निकल कर शाहजहाँपुर बाबैल, घान्ना और सहारनपुर में होती हुई पाँवधोई का पानी लेकर हिण्डन नदी में मिल जाती है।

(१२) पाँवधोई—यह नदी सहारनपुर परगने से निकल कर सहारनपुर नगर में ढमोला नदी में मिल जाती है।

(१३) छच्छी रौ—यह नदी शिवालिक पर्वत निकलती है और परगने मुजफ्फराबाद में बहकर फतहपु के निकट हिंडन नदी में मिल जाती है।

(१४) नागादेव रौ—शिवालिक पर्वत से निकलक मुजफ्फराबाद और सहारनपुर परगनों में बहकर हिंड नदी में मिल जाती है।

(१५) काली नदी—यह नदी परगना हरौड़ा निकलकर नागल और देवबन्द के परगनों में होती हुई जि मुजफ्फरनगर को चली जाती है।

(१६) कृष्णा नदी—परगने सहारनपुर में यमुना नह के पानी से और कृष्णी के उद्‌गार से उत्पन्न हो कर परगन रामपुर में बहती हुई जिले मुजफ्फरनगर को चली जाती है रामपुर इसी के किनारे आबाद है।

(१७) काठा नदी —परगने नकुड़ में बहलोलपुर झील से निकलकर नकुड़ और गंगोह के परगने में बहती हुई जिले मुजफ्फरनगर को चली जाती है।

(१८) सेंधली नदी—सिरसका झील से निकलकर नकुड़ और गंगोह के परगनों में बहती हुई मुजफ्फरनगर को चली जाती है।

इसके अतिरिक्त भी और कई छोटी २ नदियां हैं हमारे जिले की अधिकांश नदियों का जन्मदाता शिवालिक पर्वत ही है। अधिकांश नदियां उसी से निकलती हैं।

नदियों से लाभ

(१) पानी के अभाव में नदियों से नहरें निकाली जा सकती हैं।

(२) वर्षा के अधिक पानी को नदियां बहा ले जाती हैं। नगरों की गन्दी नालियों का पानी भी बहा ले जाती हैं।

(३) नदियां समीप की भूमि में नई मिट्टी बिछा देती हैं जिससे भूमि उपजाऊ हो जाती है।

(४) छोटी-छोटी नदियों से सिंचाई होती है।

(५) नदियों में किश्तियाँ चलाई जाती है। बड़ी नदियों के बहाव से लकड़ी के लट्ठे एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाये जाते हैं।

(६) नदियों का पानी सूर्य की किरणों से भाप बनकर उड़ता है जिससे बादल बनते हैं और वर्षा होती है।

(७) नदियों का पानी पाचक होता है क्योंकि वह लोहा आदि कई धातुओं को घिसाकर अपने साथ लाते हैं।

(८) नदियों से रेत निकाला जाता है जो इमारतें आदि के बनाने में काम आता है।

नदियों से हानि

जिस प्रकार नदियों से लाभ है उसी प्रकार कई हानियाँ भी हैं।

(१) दरिया में आदमी और पशु डूब जाते हैं।

(२) बाढ़ के आने पर गाँव बह जाते है और खेती नष्ट हो जाती है।

नहरें

पानी और खाद खेती के लिये अति आवश्यक है। यदि यह न हों तो खेतों में कुछ भी उत्पन्न न हो। वर्षा का पानी खेती में सहायक होता है किन्तु वह अपने अधिकार में नहीं है अतः दूसरे साधनों की आवश्यकता होती है। कुओं, तालाबों और ट्यूबवैल से भी सिंचाई होती है। परन्तु अधिक सिंचाई नहरों से होती है, नहरों से तीन लाभ हैं:–

(१) सिंचाई होती है और कई नगरों में पीने के पानी के अभाव को दूर करती हैं।

(२) नहरों के निकलने से नदियों का जोर घट जाता है। बाढ़ को रोककर खेत और आबादी के स्थान सुरक्षित किये जा सकते हैं। नदियों पर बाँधे हुए पुलों के टूटने का डर नहीं रहता।

(३) इनकी सहायता से पनचक्कियाँ चलती हैं, जिन से अनाज पिसता है।

जिले सहारनपुर में तीन नहरें हैं जिनसे अनेक राजबाहे निकाल कर सिंचाई की जाती है।

(१) पूर्वी यमुना नहर—यह नहर यमुना से गोविन्दपुर के निकट बोगरीवाले में निकाली गई है। फैजाबाद, मुजफ्फराबाद, सहारनपुर, रामपुर के परगनों को

पानी देती हुई ज़िला मुजफ्फरनगर को चली गई है। बोगरी वाले का पुल देखने योग्य है।

(२) गंग नहर—यह नहर गंगा से हरिद्वार (मायापुर) में निकाली गई है। यह ज्वालापुर, रुड़की और मंगलौर के परगनों में सिंचाई करके जिला मुजफ्फरनगर को चली गई है। रुड़की में सोलानी नदी के ऊपर इस नहर को पुल द्वारा लाया गया है। यह पुल देखने योग्य है। यह नहर हमारे प्रान्त की सबसे बड़ी नहर है।

(३) शाखा नहर देवबन्द—यह नहर गंगा नहर से मंगलौर के समीप निकाली गई है। जो मंगलौर, देवबन्द, नागल के परगनों में सिंचाई करती है।

यह स्मरण करने की बात है कि नदी प्राकृतिक पानी की धारा है, यह अपनी इच्छानुसार चाहे जहाँ बहती है। नदियें प्राय: अपनी धारा बदलती रहती हैं। नहरें मनुष्य की बनाई हुई पानी की धारा हैं इन्हें इच्छानुसार रोका या इधर उधर लेजाया जा सकता है।

अभ्यास के प्रश्न

१—जिले की दो प्रमुख नदियों के नाम बताओ।
२—चार ऐसी नदियों के नाम बताओ जो शिवालिक पर्वत से निकलती हों।
३—दो ऐसी नदियों के नाम बताओ जो झीलों से निकलती हैं।
४—जिले सहारनपुर में गंगा नदी के किनारे कौन २ से स्थान स्थित हैं ?
५—नदियों से क्या लाभ हैं ?
३—हमारे जिले में कितनी नहरें हैं ?

दसवाँ पाठ

आने जाने के साधन

प्राचीन काल में यात्रा के इतने साधन नहीं थे जितने इस समय में हैं। प्राचीन काल में लोग पैदल चलते थे। उनको कभी घोड़े, टट्टू या बैलगाड़ी की सुविधा मिल जाती थी। यदि मार्ग में नदी होती थी तो अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ता था। बाढ़ के आने पर कई-कई दिन प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। वनों में यात्रा करने से चोरी और डाके का भय यात्री को हर समय लगा रहता था। हिंसक पशुओं का भी डर लगा रहता था। यही कारण था कि उस समय में कोई आदमी जब दूर की यात्रा करने जाता था तो घर वालों से अच्छी तरह मिलकर जाता कि क्या जाने फिर घर जीवित लौटकर आसके या नहीं।

इस समय में मार्ग में कोई भय नहीं। यात्रा के लिये रेल तथा मोटरों की सुविधायें प्राप्त हैं जिससे दिनों की यात्रा घंटों में तय होजाती है। आकाश से यात्रा करने के लिये हवाई जहाज की सुविधायें हैं जिनसे महीनों की यात्रा घंटों में पूरी होजाती है।

हमारे जिले में यात्रा करने के लिये तीन प्रकार की सड़कें हैं। (१) रेल की सड़कें (२) पक्की सड़कें (३) कच्ची सड़कें।

रेल की सड़क

रेल चलाने के लिये लोहे की पटरियाँ थोड़े फासले पर समानान्तर बिछाई जाती हैं, जिन पर रेल चलती है।

रेलगाड़ी दो प्रकार की होती हैं बड़ी लाइन छोटी लाइन। बड़ी लाइन की पटरिया चौडी और छोटी लाइन की पटरियों में कम अन्तर होता है।

हमारे जिले में चलने वाली रेलें

हमारे जिले में उत्तर रेलवे की बड़ो गाड़ियाँ चलती हैं। जिनका मार्ग इस प्रकार है:—

१—सहारनपुर से पिलखनी और सरसावा होती हुई पंजाब चली जाती है।

२—सहारनपुर से टपरी, नागल, तलहेड़ी, देवबन्द होती हुई जिला मुजफ्फरनगर को जाती है।

३—सहारनपुर से बलियाखेडी, चुड़ियाला, इकबालपुर, रुड़की, लण्ढौरा, लकसर और रायसी होती हुई जिला बिजनौर को चली जाती है। इसकी एक शाखा लकसर जंकशन से पथरी, ज्वालापुर, हरिद्वार होती हुई देहरादून को चली जाती है। दूसरी शाखा हरिद्वार से ऋषिकेश तक है।

४—सहारनपुर शारदा रेलवे—यह छोटी पटरी की लाइन है। सहारनपुर से मनानी, रामपुर मनिहारान और नानौता होती हुई जिला मुजफ्फरनगर को चली गई है।

रेल के ठहरने के स्थान को स्टेशन और कम से कम तीन ओर से आने वाली गाड़ियों के स्टेशन को जंकशन कहते हैं। हमारे जिले में सहारनपुर और लकसर दो जंकशन हैं।

पक्की सड़कें

यह सड़क पत्थर, कंकर ईंट, सिमेंट को मिलाकर या बजरी पर तारकोल डालकर बनाई जाती है। दोनों ओर पैदल चलने वालों के लिये स्थान छोड़ा जाता है। फासला बताने के २२० गज के अन्तर पर फर्लांग के निशान बने होते हैं। ८ फर्लांग पर एक मील का निशान बना होता है। इस सड़क पर मोटर, लारी, तांगे और बैलगाड़ियां चलती हैं। हमारे जिले में निम्नलिखित पक्की सड़कें हैं:-

१—सहारनपुर से नकुड़, अम्बहटा, गंगोह होती हुई तीतरों तक जाती है।

२—सहारनपुर से सरसावा होती हुई पंजाब चली जाती है।

३—सहारनपुर से बेहट, मिर्जापुर, बादशाही बाग होती हुई चोहड़पुर, चकरौता चली गई है।

४—सहारनपुर से सुल्तानपुर चिलकाने को गई है

५—सहारनपुर से कैलाशपुर, छुटमलपुर, फतहपुर होती हुई देहरादून चली गई है।

६—छुटमलपुर से भगवानपुर, रुड़की और मंगलौर को होती हुई मुजफ्फरनगर को चली गई है।

७—रुड़की से बहादराबाद, ज्वालापुर होती हुई हरिद्वार गई है।

८—सहारनपुर से कैलाशपुर, गागलहेड़ी, कोटा, नागल, देवबन्द होती हुई मुजफ्फरनगर को चली गई है।

९—सहारनपुर से रामपुरमनिहारान, नानौता होती हुई दिल्ली जाती है।

१०—देवबन्द से भायला होती हुई रोहतासपुर जाती है।

कच्ची सड़कें

यह ऊँची नीची, तथा प्रायः टेढी होती हैं। वर्षा में गारा कीचड़ हो जाता है, खुश्की में गर्द उड़ती है। इन पर बैलगाड़ियाँ घोड़े-टट्टू ढोर-डंगर आदि चलते हैं। गाँवों से अनाज आदि इन्हीं सड़कों से मंडियों में आता है। अब सड़कों पर मोटर भी चलने लगे हैं। हमारे जिले में निम्न-लिखित कच्ची सड़कें मुख्य हैं:—

१—सहारनपुर से कोटा, मनकपुर, मंगलौर तथा कुन्हारी को गई है।

२—सहारनपुर से साढ़ोली और हरिया को होकर बड़गाँव को गई है।

३—रामपुर मनिहारान से नानौता को होती हुई जिला मुजफ्फरनगर को गई है।

सड़कें व रेलवे लाइन
سڑکیں و ریلوے لائن
शिवालिक पर्वत
कच्ची सड़कें
पक्की सड़कें
रेल
पैमाना
१ इंच = १६ मील
ज़िला अम्बाला
ज़िला करनाल
ज़िला मुज़फ्फ़र नगर
ज़िला बिजनौर
फ़ैज़ाबाद
मिरज़ापुर
शाकुम्भरी
बेहट
संसारपुर
मुज़फ़राबाद
गागलहेडी
खेड़ी
फ़तहपुर
भगवानपुर
हरिद्वार
दुफ्फड़ा
सुल्तानपुर
सरसावा
पिलखनी
कैलासपुर
हरौड़ा
फंदपुरी
सहारनपुर
बलिया
चुड़ियाला
इकबालपुर
नकुड़
टपरी
काट्या
रुड़की
लंढौरा
पथरी
मनानी
सांटौली
अम्बहटा
नागल
मंगलौर
लकसर
सुल्तानपुर
कुनारी
लखनौती
गंगोह
रामपुर
तलाहेडी
नानौता
बड़गांव
देवबंद
तीतरों
जड़ौदापांडा
रायसी
राजपुर

४—रुड़की से लंढौरा होती हुई सुल्तानपुर कुन्हारी गई है।

५—फन्दपुरी से खेड़ा अफगान को होती हुई अम्बहटा को गई है।

६—अम्बहटा से इस्लामनगर, रामपुर और देवबन्द होकर मंगलौर को गई है।

७—नागल से कोटा होकर हरौड़ा गई है।

८—तीतरों से जिला मुजफ्फरनगर चली गई है।

९—बड़गाँव से नानौता, गंगोह, लखनौती होती हुई जिला करनाल को गई है।

१०—खेडी शिकोहपुर से फतहपुर भादों होकर मुजफ्फराबाद को गई है।

११—गागलहेड़ी के पुल से भगवानपुर तक गई है।

१२—खारा से हरिद्वार तक गई है।

१३—नकुड़ से काजीबाँस, कुतुबशाह, शाहजहाँपुर होती हुई सरसावा को गई है।

१४—नकुड़ से साल्हापुर, सरसावा होती हुई चिल्काना गई है।

१५—गंगोह से साल्हापुर होती हुई नकुड़ गई है।

१६—बेहट से शाकुम्बरदेवी जाती है।

बच्चो ! पर्वत में सुरंग बनाकर रेल की लाईन अथवा सड़क बनाई जाती हैं। हरिद्वार से आगे रेलवे लाइन सुरंग

से होकर पर्वत के दूसरी ओर देहरादून जाती है। देहरादून को जाने वाली पक्की सड़क भी सुरंग में होकर जाती है सुरंग को अंगरेजी में टनल कहते हैं।

किसी किसी स्थान पर पहाड़ को उड़ाकर सड़क बनाई जाती है जिस प्रकार शिवालिक को काटकर चकरौते की सड़क निकाली गई है। उसको दर्रा कहते हैं।

पक्की सड़कों की मरम्मत का प्रबन्ध सरकार का सार्वजनिक सेवा विभाग (पी० डब्ल्यू० डी०) करता है। हमारे जिले में सरसावा के निकट हवाई अड्डा भी है जहाँ से हवाई जहाज द्वारा यात्रा को जा सकती है।

अभ्यास के प्रश्न

१—यात्रा करने की कौन-कौन सवारियाँ हैं ?

२—जिले सहारनपुर में कौन-कौन सी रेलवे लाइन हैं ?

३—चार पक्की व तीन कच्ची सड़कों के नाम बताओ।

४—नक्शा देखकर बताओ कि सहारनपुर से लक्सर जावें तो मार्ग में कौन-कौन से स्टेशन पड़ेंगे ?

५—रेलवे की छोटी लाइन कहाँ से कहाँ तक जाती है ?

ग्यारहवाँ पाठ

जिले का प्रबन्ध

बच्चो, जैसे तुम्हारे घर का प्रबन्ध तुम्हारे पिताजी या बाबाजी चलाते हैं। घर के भोजन, वस्त्र या दूसरी चीजों

को लाने की जिम्मेदारी उनकी होती है, पाठशाला का प्रबन्ध तुम्हारे गुरु जी करते हैं, यदि वहाँ आपस में बच्चे झगड़ पड़ें तो उनको समझाना या दंड देना भी उनके आधीन होता है। ऐसे ही हमारे गाँव, कस्बे, नगर, जिले, प्रांत और देश के प्रबन्ध करने की जिम्मेदारी सरकार के ऊपर है। आओ देखें, हमारे जिले का शासन प्रबन्ध कैसे होता है ?

जब हमारा देश आजाद हुआ तो हमारी सरकार ने ग्रामों की उन्नति के लिये ग्राम पंचायतों का निर्माण किया। ग्राम सभायें बनने से गाँव वाले अपना और अपने गाँव की उन्नति का प्रबन्ध स्वयं करने लगे। इस नियम के अनुसार २५० या उससे अधिक आबादी के गाँव में ग्राम सभा बनाई जाती है। जिन ग्रामों की जनसंख्या २५० से कम होती है ऐसे ग्राम दो या तीन मिलकर अपनी ग्राम सभा बनाते हैं।

प्रत्येक गाँव सभा में जनता द्वारा चुने हुए सदस्य होते हैं जिनकी संख्या पन्द्रह से तीस तक जनसंख्या के अनुपात के अनुसार पाँच वर्ष के लिये चुनी जाती है। चुने हुए यह सदस्य प्रतिवर्ष अपने में से एक प्रधान और एक उपप्रधान को चुनते हैं। ग्राम सभा का प्रधान ग्राम पंचायत का प्रधान भी होता है। ग्राम पंचायत में एक मंत्री प्रदेश सरकार द्वारा चुना हुआ होता है। ग्राम पंचायत की देख रेख में ही ग्राम सभा गाँव का प्रबन्ध और उन्नति के कार्य

करती है। पंचायतों में गाँव के झगड़े भी तय किये जाते हैं। पहले जिन मुकदमों के कारण गाँव के निवासी वर्षों अदालतों और वकीलों के चक्करों में हजारों रुपये और समय को बरबाद करते थे अब पंचायत अदालत से जल्दी ही सस्ता न्याय पा जाते हैं।

सारे जिले के प्रबन्ध के लिये जिले में जिलाधीश (कलक्टर या जिला मजिस्ट्रेट) प्रमुख अधिकारी है। इनके अधिकार में कई तहसीलें होती हैं। प्रबन्ध के लिये प्रत्येक तहसील में एक तहसीलदार और एक मण्डलापति होता है। तहसीलों को परगनों में विभाजित किया जाता है। परगने का अधिकारी सुपरवाइजर कानूगो होता है। परगना कई हल्कों में विभाजित होता है, प्रत्येक हल्के में कई गाँव होके हैं। प्रत्येक हल्के का अधिकारी लेखपाल (पटवारी) होता है।

लेखपाल (पटवारी) का मुख्य कर्तव्य प्रत्येक गाँव की भूमि का ब्यौरा रखना है। इसके मुख्य कागज, खसरा व खतौनी है। जमींदारी उन्मूलन (समाप्ति) से खेवट समाप्त हो गई है। खसरे में प्रत्येक खेत की पैमायश मालिक का नाम तथा उसकी उपज का ब्यौरा होता है। खतौली में प्रत्येक कृषक की समस्त भूमि का विवरण तथा भूमि कर का ब्यौरा होता है। भूमि कर वसूली के लिये अमीन रखे जाते हैं।

जिले सहारनपुर में चार तहसीलें हैं– (१) सहारनपुर (२) नकुड़ (३) देवबन्द (४) रुड़की ।

जिला सहारनपुर निम्नलिखित पन्द्रह परगनों में विभाजित है ।

नाम तहसील	परगना
१ सहारनपुर—	(१) सहारनपुर (२) हरौड़ा (३) मुजफ्फराबाद (४) फैजाबाद
२ नकुड़—	(१) नकुड़ (२) सरसावा (३) सुल्तानपुर (२) गंगोह ।
३ देवबन्द—	(१) देवबन्द (२) नागल (३) रामपुर
४ रुड़की —	(१) रुड़की (२) भगवानपुर (३) ज्वालापुर (४) मंगलौर

जिले के गाँवों प्रबन्ध के लिये अन्तरिम ज़िलापरिषद हैं जिसके कई सदस्य होते हैं । जिलाधीश इस परिषद का अध्यक्ष होता हैं । जिला परिषद का मुख्य कार्य प्रारम्भिक शिक्षा का प्रबन्ध करना, सरकारी माल की देखभाल करना, गाँवों की सफाई करना एवं सड़कों की मरम्मत कराना है ।

इसी प्रकार नगरों के प्रबन्ध के लिये बड़े नगरों में नगरपालिकायें हैं । उनमें कई सदस्य होते हैं उनका चुनाव जनता द्वारा होता है । उनका भी एक अध्यक्ष होता है । ऐसी नगरपालिकायें सहारनपुर, रुड़की, हरिद्वार, देवबन्द मंगलौर और गंगोह में हैं । छोटे नगरों में टाउन एरिया होते हैं जो निम्न कस्बों में हैः—

बेहट सरसावा, नकुड़, तीतरों अम्बहटा, रामपुर मनिहारान, झबरेडा, चिलकाना, नानौता।

नगरपालिका और टाउन एरिया का अपने अपने कस्बों या नगरों में शिक्षा का प्रबन्ध, नगर की सफाई तथा रोशनी का प्रबन्ध करना है। इनके व्यय के लिये चुंगी या टोल टैक्स लगाया जाता है। इसके लिये प्रत्येक मार्ग पर चुंगी की चौकी होती है जिसका काम नगर में माल के दाखिल होते समय टोल टैक्स प्राप्त करना है।

फौजदारी और दीवानी अदालतें

न्याय करने के लिये अदालतें होती हैं। अदालत माल में भूमि सम्बन्धी मुकदमें तय होते हैं। फौजदारी अभियोग पुलिस की ओर से होते हैं। इन मुकदमों को कलक्टर और डिप्टी कलक्टर करते हैं। विशेष मुकदमों की सुनवाई सेशन जज के समक्ष होती है।

दीवानी के मुक़दमे तय करने के लिये मुन्सिफ, सबजज और जज आदि की अदालतें होती हैं।

जिले में भोजन और कमी की चीजें जैसे सिमेंट, लोहा आदि की पूर्ति के लिये जिला सप्लाई अधिकारी, विकास के लिये जिला प्लानिंग (विकास) अधिकारी और जिले की हलचलों की सूचना देने के लिये सूचना अधिकारी होता है।

अभ्यास के प्रश्न

१—जिले के प्रमुख अधिकारी को क्या कहते हैं ?

२—कौनसा सरकारी काम पटवारी के आधीन होता है ?

३—तहसील रुड़की में कौन २ से परगने हैं ?
४—जिला बोर्ड और नगरपालिका के क्या कर्तव्य हैं ?
५—दीवानी अदालतों का क्या काम है ?
६—फौजदारी मुकदमें कैसे होते है ?
७—जिले की कमी की चीजों को पूरा करने की जिम्मेदारी किसकी है ?

बारहवाँ पाठ

थाने

बच्चो ! तुमने पुलिस के सिपाहियों को देखा होगा जो चोरों आदि से जनता की रक्षा करते हैं, भीड़ नहीं होने देते, मोटर, तांगों और बाईसिकलों को जनता की रक्षा के लिये अपने हाथ से ठीक चलवाते हैं। झगड़ा होने पर बीच बचाव करते हैं। यदि कहीं खून हो जाये तो अपराधी को पकड़कर अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं, मामूली बात हो तो अपराधी को डाँट डपट कर छोड़ दिया जाता है। असाधारण मामला हो तो अपराधी को हवालात में बंद कर दिया जाता है और उस पर मुकदमा चलाया जाता है।

सरकार ने जनता की रक्षा के लिये पुलिस विभाग की स्थापना की है। प्रत्येक गाँव में चौकीदार होता है। गाँव का प्रधान जनता द्वारा चुना जाता है। गाँव में जब कोई घटना होती है तो प्रधान चौकीदार को थाने में भेजकर

रिपोर्ट कराता है। थाने के अधिकार में बहुत से गाँव होते है। थाने का मुख्य अधिकारी थानेदार होता है। जिसके आधीन छोटा थानेदार, हैडकान्स्टेबल और कई सिपाही होते हैं जब कोई झगड़ा होता है तो पुलिस अधिकारी तुरन्त घटना स्थल पर जाकर निरीक्षण करते हैं और अपराधी को पकड़कर जिलाधीश अथवा मण्ड़लाधिपति के संमुख प्रस्तुत करके दण्ड दिलवाते हैं। प्रत्येक तहसील में थानों की जाँच के लिये सर्किल इन्सपैक्टर होता है। प्रत्येक जिले में कोतवाली होती है। जिले में पुलिस का प्रमुख अधिकारी पुलिस कप्तान होता है। जिले में एक पुलिस लाइन होती है। जिसमें हर समय सौ सशस्त्र सिपाही रहते हैं जो डकैती या दंगे के समय पुलिस की सहायता के लिये भेजे जाते हैं। कुछ गुप्त पुलिस भी होती है जो बिना वर्दी के रहकर और वेश बदलकर अपराधियों को पकड़ते हैं। रेलवे की पुलिस का विभाग अलग होता है।

जिले सहारनपुर के थाने

नाम तहसील	थाने
१ सहारनपुर	(१) सहारनपुर (२) बेहट (३) बिहारी (४) फतहपुर।
२ नकुड़	(१) नकुड़ सरसावा (२) गंगोह (३) चिल्काना
३ देवबन्द	(१) देवबन्द (२) नागल (३) लकसर (४) रामपुर (५) बडगाँव (६) नानौता

४ रुड़की—(१) रुड़की (२) मंगलौर (३) लकसर (४) मायापुर (५) ज्वालापुर (६) हरिद्वार (७) झबरेडा

अभ्यास के प्रश्न

१—पुलिस विभाग क्यों बनाया गया है ?
२—पुलिस विभाग न हो तो क्या खराबी हो ?
३—अपने गाँव के थाने का नाम बताओ।
४—थाने के अधिकारी को क्या कहते हैं ?
५—जिले में पुलिस का सबसे बड़ा अधिकारी कौन है ? ?

तेरहवाँ पाठ

चिकित्सालय (शफाखाने)

बच्चो ! जनता के स्वास्थ्य के लिये और रोगों को दूर करने के लिये स्थान-स्थान पर चिकित्सालय बने हुए हैं। वहाँ पर हर कोई चिकित्सा निःशुल्क करा सकता है। जिले का प्रमुख चिकित्सालय बाजोरिया चिकित्सालय है जो सहारनपुर नगर में है। इसका प्रमुख अधिकारी सिविल सर्जन है। जो अनेक डाक्टरों, कम्पाउडरों, नर्सों आदि की सहायता से चिकित्सा का प्रबन्ध करता है।

जिले में अन्य स्थानों पर भी बहुत से चिकित्सालय खुले है जिनका अधिकारी मैडिकल आफिसर होता है उसके

आधीन कम्पाउंडर होते हैं। इनका व्यय सरकार, जिला बोर्ड एवं नगरपालिका द्वारा होता है। सहारनपुर में बाजोरिया चिकित्सालय के अतिरिक्त हिन्दू धर्मार्थ औषधालय, जैन चिकित्सालय और एक नगरपालिका (म्युनिसिपल)
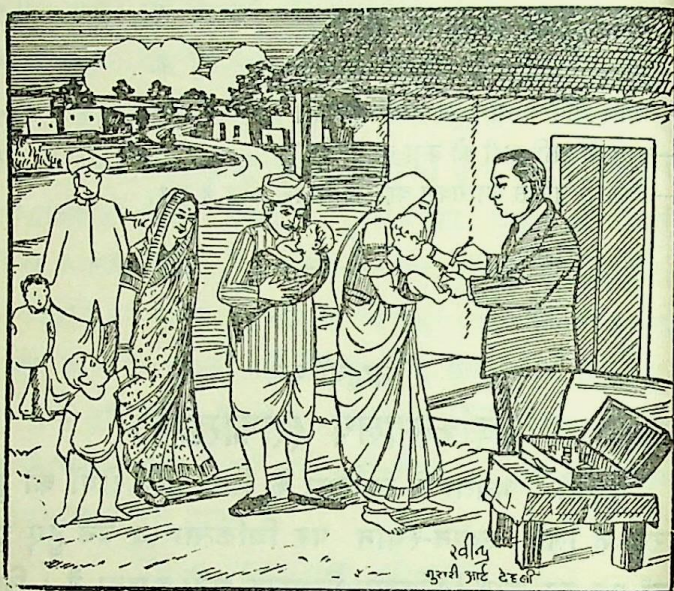
पब्लिक चिकित्सालय है। इनमें भी निःशुल्क चिकित्सा होती है। इनका व्यय कुछ लोग करते है कुछ चन्दा जनता से प्राप्त होता है। स्त्रियों के लिये भी एक बड़ा चिकित्सालय है जहाँ पर स्त्रियों की चिकित्सा होती है। इसके अतिरिक्त एक जच्चा-बच्चा हस्पताल है, जहाँ से बच्चा पैदा कराने के लिये दाई और डाक्टरनी को निःशुल्क बुलाया जा सकता

है। स्त्रियाँ वहाँ पर दाखिल भी कराई जा सकती हैं। वहाँ पर सेवा के लिये नर्सें प्रत्येक समय उपस्थित रहती है।

सरकार ने जनता के लाभार्थ चलने फिरने वाले चिकित्सालयों का भी आयोजन किया है जिनकी निगरानी स्वास्थ्य विभाग द्वारा होती है। यह जनता को भीषण रोगों से बचाने के लिये टीके लगाते हैं।

कुछ चिकित्सालय निजी भी होते हैं, जिन्हें डाक्टर चलाते हैं जिनमें डाक्टर की फीस और दवा का मूल्य देकर चिकित्सा कराई जा सकती है।

जिले सहारनपुर के चिकित्सालय

१ सहारनपुर—(१) सहारनपुर (२) कलसिया (३) बेहट (४) संसारपुर (५) फतेहपुर।

२ नकुड़—(१) नकुड़ (२) गंगोह (३) तीतरों

३ देवबन्द—(१) देवबन्द (२) रामपुर मनिहारान (३) गंगदासपुर।

४ रुड़की—(१) रुड़की (२) मंगलौर (३) ज्वालापुर (४) भगवानपुर (५) लंढौरा (६) हरिद्वार (७) मायापुर (८) कनखल।

इसके अतिरिक्त पशु चिकित्सालय भी होते हैं जहाँ पशुओं की चिकित्सा की जाती है। आवारा पशुओं के लिये कुछ स्थानों पर कांजी हाऊस भी होते हैं। जहाँ जनता को परेशान करने वाले पशु रक्खे जाते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

१—चिकित्सालय किसको कहते हैं ?

२—जिले में कितने चिकित्सालय हैं ?

३—स्त्रियों के चिकित्सालय कहाँ २ हैं ?

चौदहवाँ पाठ

डाकखाने

बच्चो ! प्राचीनकाल में सूचना मंगाना और भेजना बड़ा कठिन कार्य था। पहले हरकारे द्वारा सूचना भेजी जाती थी। सवारी की असुविधा के कारण सूचना समय पर नहीं पहुँच पाती थी। किन्तु आज डाक विभाग से बड़ी सुविधा होगई है। पाँच नये पैसे का कार्ड लो और लेटरबक्स में डाल दो। सूचना शीघ्र पहुँच जायेगी और उसका उत्तर घर बैठे आ जायेगा। इसके द्वारा रुपये तथा अन्य वस्तुयें भी भेजी जा सकती हैं। उनकी रक्षा डाक वाले स्वयं करते हैं। जहाँ पर उनका पता लिखा जाता है, डाकखाने वाले उसको वहीं पर पहुँचा देते हैं। इस विभाग के द्वारा महीनों का काम अब दिनों में हो जाता है। नगरों और कस्बों में डाकघर बने हैं। वहाँ से टिकट, लिफाफे और पोस्टकार्ड मोल मिलते हैं। मनीआर्डर, रजिस्ट्री,

बीमा और पारसल भी वहीं होते हैं। बाजार, मुहल्लों और ग्रामों में लेटर-बक्स लगे होते हैं। जहाँ पर हम अपनी चिट्ठियाँ डाल सकते हैं।

अब दूर की डाक वायुयान द्वारा भी जाने लगी हैं। इसके अतिरिक्त तार व टेलीफोन का भी प्रबन्ध है। ८० नये पैसे खर्च करके भारत में चाहे जहाँ तार द्वारा सूचना भेज सकते हैं। टेलीफोन द्वारा खड़े-खड़े बहुत दूर के नगरों में स्थित मित्रों से बातचीत कर सकते हैं, इसके लिये प्रत्येक स्थान का शुल्क नियत है।

डाकघरों में सेविंग बैंक होते हैं जिनमें हम अपना फालतू रुपया जमा कर सकते हैं। इस रुपये पर हमको सूद भी मिलता है। आवश्यकतानुसार सप्ताह में दो बार

रुपया निकाल सकते हैं और जमा प्रत्येक दिवस करा सकते हैं। इसकी हिसाब की किताब भी डाकखाने से मिलती है जिसे पास बुक कहते हैं।

डाक का जिले का प्रमुख कार्यालय सहारनपुर में है। जिले के सब डाकघर इसके अधिकार में हैं। जहाँ डाकखाने नहीं हैं, वहाँ ग्रामीण पोस्टमैन डाक पहुंचाते हैं।

जिले सहारनपुर की प्रत्येक तहसीलों में अनेक डाकखाने और तारघर हैं। दिन प्रतिदिन जनता की सुविधा के लिये और डाकखाने खोले जारहे हैं।

अभ्यास के प्रश्न

१—डाकघर किसको कहते हैं ?
२—डाकखानों से क्या लाभ है ?
३—तार और टेलीफोन से हम को क्या लाभ होता है ?
४—देहात में चिट्ठियाँ किस प्रकार पहुँचती है ?

पन्द्रहवाँ पाठ

मेले

बच्चो ! तुमने मेले अवश्य देखें होंगे। मेले में खूब रौनक होती है। उसका नाम सुनकर तुम्हारा चित्त प्रसन्न होजाता है और तुम सदा मेले में जाने के इच्छुक रहते हो। मेलों में खूब जन-समूदाय आता है। जहाँ अनेक प्रकार के

खेल तमाशे होते हैं। अनेक प्रकार की मिठाइयाँ खाने को मिलती हैं। भिन्न-भिन्न स्थानों के भिन्न-भिन्न वेष भूषा के व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं। कुछ समय के लिये जंगल में मंगल हो जाता है। यह मेले आमतौर पर किसी धार्मिक अथवा ऐतिहासिक स्मृति को मानने के लिये होते हैं। मेलों में हमको नई-नई बातों का ज्ञान होता हैं। आओ, अब तुम्हें इस पाठ में तुम्हारे जिले के मेलों का ज्ञान करायें।

जिले सहारनपुर के मेले

१—सहारनपुर में प्रतिवर्ष भादों सुँदी दशमी को गुघाल का बड़ा भारी मेला और प्रतिवर्ष नुमायश के मेले होते हैं।

२—हरिद्वार के गंगा स्नान के मेले प्रसिद्ध हैं। बैसाखी, सोमवती अमावस, सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण के मेलों में खूब रौनक होती हैं। प्रत्येक छटे वर्ष कुम्भी और बारह वर्ष के पश्चात् कुम्भ का प्रसिद्ध मेला लगता है जिनमें देश भर से लाखों लोग गंगा स्नान के लिये आते हैं। इस अवसर पर साधुओं के बड़े २ जलूस जिन्हें शाहियाँ कहते हैं निकलती हैं।

३–शाकुम्भरी देवी में आश्विन सुदी चौदस और होली पर देवी पूजा के बहुत बड़े मेले लगते हैं।

४–पीरानकलियर में हजरत अलाउद्दीन साबिर के मजार पर प्रतिवर्ष मेला लगता है।

५–देवबन्द में चैत्र सुदी चौदस को बाला सुन्दरी देवी का मेला होता है।

६–सरसावा में मखदूम साहब के मजार पर रजब माह में उर्स का मेला लगता है।

७–रणदेवा में प्यारे जी को समाधि पर प्रति वर्ष मेला होता है।

८–रामपुर में रामनवमी का मेला होता है।

९–इस्लामनगर में बूढ़े बाबा का मेला लगता है।

१०–राजपुर में छड़ियों का मेला लगता है।

११–मानकी और बरसी में रामनवमी का मेला होता है।

१२–पंचौली में बानगंगा के किनारे जेठ के दशहरे पर स्नान का मेला होता है।

१३–गढ़देव में भादों के महीने में गणेश चौथ का मेला होता है।

१४–सुलतानपुर चिल्काना में मुहर्रम बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

अभ्यास के प्रश्न

१—मेलों से क्या लाभ हैं ?

२— हम मेलों से क्या प्राप्त करते हैं ?

३—जिले सहारनपुर के पाँच प्रसिद्ध मेलों के नाम बताओ।

सोलहवाँ पाठ

शिक्षा

पढ़ना लिखना है सुखदाई ।
मिले इसी से सभी बड़ाई ।।
पहले थोड़ा दुःख उठाना ।
फिर सब दिन आनन्द मनाना ।।
बिना पढ़े नर पशु कहावें ।
सदा सैकड़ों कष्ट उठावें ।।

बच्चो ! पढ़ने से ज्ञान प्राप्त होता है और जीवन सुख से व्यतीत होता है । जो नहीं पढ़ते उनको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । उनको अपना पेट भरने के लिये मजदूरी करनी पड़ती है और दूसरों के आधीन रहना पड़ता है । बड़े-बड़े आदमियों को जो तुम देखते हो वह पढ़ाई के कारण ही बड़े हो गये हैं । हमारी सरकार ने जनता की पढ़ाई को सुविधा के लिये स्थान-स्थान पर पाठशालायें खोल रक्खी है । विद्या के बिना मनुष्य पशु के समान है वह न व्यापार कर सकता है न अधिकारी बन सकता है । विद्या बिना मनुष्य अन्धकार में भटकता रहता है न ही वह ईश्वर का भजन कर सकता है। अतः उसे मोक्ष भी प्राप्त नहीं हो सकता ।

सरकार की ओर से शिक्षा का प्रबन्ध है। हम शिक्षा क्रम को तीन वर्गों में विभाजित कर सकते हैं।

१—प्रारम्भिक वर्ग २—मधयम वर्ग ३—उच्च वर्ग

(१) प्रारम्भिक वर्ग—प्रारम्भिक वर्ग में पाँचवी कक्षा तक की शिक्षा की गणना है। प्रदेश सरकार ने १६३६ ई० से बेसिक शिक्षा का आरम्भ किया था। जिसमें हाथ का काम, कताई, बुनाई, खेती, इतिहास, भूगोल और विज्ञान विषय आरम्भ से ही पढ़ाये जाते हैं। यह विद्या बड़ी लाभ-दायक है क्योंकि इसको सीखकर मनुष्य नौकरी की खोज में मारा २ न फिरकर हाथ से काम करके अपने जीवन को आनन्द पूर्वक व्यतीत कर सकता है। इसके लिये सरकार की ओर से अनेक स्थानों पर प्रारम्भिक बेसिक पाठशालायें खुली हुई हैं। इनकी देखभाल सब डिप्टी इंसपेक्टर करते हैं जो प्रत्येक तहसील में एक रहता है। ये उपविद्यालय निरीक्षक (डिप्टो इंसपेक्टर) के आधीन होते हैं। कुछ समय से नगर पालिकाओं तथा जिला बोर्डों ने कुछ स्थानों में अनिवार्य शिक्षा के कार्य-क्रम का आरम्भ किया है जिसमें ६ वर्ष से ११ वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिये पढ़ना आवश्यक कर दिया है, हमारे जिले में निम्नलिखित स्थानों पर अनिवार्य शिक्षा निःशुल्क दी जाती है।

(१) सहारनपुर (२) नागल (३) रामपुर (४) नानौता (५) बेहट (६) बिहारीगढ़ (७) जड़ौदा पाँडा

(८) मुजफ्फराबाद (९) सरसावा (१०) नकुड़ (११) गंगोह (१२) तीतरों (१३) लंढोरा (१४) भगवानपुर (१५) झबरेड़ा

जिले में अन्तरिम जिला परिषद के खोले हुए लगभग ८०० बालकों के लिये तथा बालिकाओं के १२० स्कूल हैं। नगर पालिकाओं ने अपने नगरों में निम्न संख्या में स्कूल खोले हैं। सहारनपुर ३५ रुड़की ११ देवबन्द १२ हरिद्वार यूनियन ३३

(२) मध्यम वर्ग—मध्यम वर्ग में छटी कक्षा से १२ वीं कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। छटी से आठवीं कक्षा तक अन्तरिम जिला परिषद की ओर से अनेक जूनियर हाई स्कूल खुले हुये है। इनके अतिरिक्त कुछ जूनियर हाई स्कूल जनता की ओर से भी खुले हुये है। जिनको सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। छटी से दसवीं कक्षा तक की शिक्षा के लिये हायर सेकण्डरी स्कूल और बारहवीं कक्षा तक की शिक्षा के लिये इन्टर कालिज खुले हुये है जिनमें कुछ जनता के चन्दे द्वारा चलाये जाते हैं।

(३) जूनियर हाई स्कूल—इनमें छटी से आठवीं कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। यह स्कूल उपविद्यालय निरीक्षक के अधिकार में होते है। हमारे जिले में प्रत्येक तहसील में अनेक जूनियर हाई स्कूल हैं।

हमारे जिले में पाँच डिग्री कालिज हैं जहाँ एम. ए. व बी. ए. तक की शिक्षा दी जाती है:—

१—जैन डिग्री कॉलिज, सहारनपुर

२—महाराजसिंह डिग्री कॉलिज, सहारनपुर
३—ब्राह्मण डिग्री कॉलिज, रुड़की
४—राजा महेन्द्रप्रताप डिग्री कॉलिज, नारसन
५—गुरुकुल कांगडी डिग्री कॉलिज, हरिद्वार
६—कन्हैयालाल जी० ए० वी० डिग्री कालेज रुड़की
७—गुर्जर डिग्री कालिज रामपुर

नारसन व रामपुर के डिग्री कालिज में कृषि सम्बन्धी, महाराजसिंह व गुरुकुल कांगड़ी में विज्ञान एवं जैन कालिज में आर्ट व वाणिज्य की शिक्षा दी जाती है।

(२) इंटर कॉलिज—इसमें छटी से बारहवीं कक्षा तक शिक्षा दी जाती है। यह कॉलिज अधिकांश जनता द्वारा चलाये जाते हैं। सरकार भी इनको कुछ सहायता करती है। कुछ कॉलिज सरकारी भी हैं। इनकी देखभाल के लिये जिले में जिला विद्यालय निरीक्षक रहता है। हमारे जिले में अनेकों हायर सेकेण्डरी स्कूल तथा इंटर कॉलिज हैं:—

हमारे जिले में ७ डिग्री कालेजों के साथ ही ३ विश्वविद्यालय भी है जो अपनी विशेषताओं के कारण देश भर में प्रसिद्ध हैं।

१—रुड़की इंजीनियरिंग विश्वविद्यालय रुड़की—पहले थामसन कालिज के नाम से विख्यात था। इंजीनिरिंग की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दी जाती है।

२–गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार–धार्मिक शिक्षा का सर्वोच्च प्रबन्ध है।

३–दारुल उलूम देवबन्द–अरबी शिक्षा की शिक्षा का प्रबन्ध है। दुनिया भर से अरबी शिक्षा के लिये यहाँ विद्यार्थी आते हैं।

चिकित्सा सम्बन्धी शिक्षालय

हरिद्वार में ऋषिकुल आयुर्वैदिक कालिज और सहारनपुर में तिब्बिया (यूनानी) कालिज है।

सहारनपुर नगर में डाक और तार विभाग का एक महत्वपूर्ण शिक्षालय है जहाँ देश भर से विद्यार्थी आते हैं। सहारनपुर में ही एक अन्धे काबहरों भी स्कूल है। १९६१ की जनगणना के अनुसार हमारे जिले में लगभग चौथाई आदमी पढ़े लिखे हैं।

इनके अतिरिक्त महिला शिक्षा के लिये भी जिले में कई जूनियर तथा हायर सेकेण्डरी स्कूल हैं। सहारनपुर के जयभगवान स्वरूप गर्ल्स कॉलिज में एम. ए. तक पढ़ाई होती है। सहारनपुर, नकुड़, गंगोह, रुड़की, हरिद्वार, देवबन्द में लड़कियों की शिक्षा के लिये अनेकों पाठशालायें व कालिज हैं।

इनके अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा की भी कुछ पाठशालायें हैं जो हमारे जिले में निम्नलिखित जगहों पर हैं:—

मुसलमानों की धार्मिक शिक्षा की पाठशालायें

(१) सहारनपुर (२) देवबन्द का दारु अलूम (३) ज्वालापुर (४) गंगोह (५) रेड़ी (६) रायपुर ।

हिन्दुओं की धार्मिक शिक्षा की पाठशालायें

(१) सहारनपुर (२) हरिद्वार (३) ज्वालापुर में गुरुकुल महाविद्यालय हैं ।

अभ्यास के प्रश्न

१—शिक्षा के लाभ बताओ ?
२—जिला सहारनपुर में कितने इन्टर कालिज हैं ?
३—अनिवार्य शिक्षा का क्या अर्थ है
४—तहसील नकुड़ में जूनियर हाई स्कूल कहाँ २ हैं ?
५—बेसिक स्कूलों से क्या लाभ हैं ?
६—इंजीनियरिंग की शिक्षा कहाँ दी जाती है ?

सतरहवाँ पाठ

प्रसिद्ध स्थान

तहसील सहारनपुर

सहारनपुर—पहले इस खंड का नाम कालिंग था जो समय के प्रभाव से नष्ट होगया। बहुत समय पश्चात् इसे शाह-हारुन चिश्ती ने बसाया उसी नाम पर इस नगर का पहला नाम शाहहारूनपुर था। प्रयोग में आने से सहारनपुर होगया। दिल्ली प्रान्तीय मुस्लिम और हिन्दू संस्मरण नामक सरकारी गजट

के प्रथम भाग के आधार पर ज्ञात हुआ है कि सहारनपुर को ला० शाह रणवीरसिंह जैन ने बसाया था, जो उन्हें सम्राट अकबर से जागीर के रूप में मिला था।

जिले के प्रमुख अधिकारी यहीं रहते हैं यहाँ का कम्पनी बाग देश देश भर में विख्यात है। जिसमें मैदानी, जंगली, पहाड़ी और दूसरे देशों के अनेक प्रकार के वृक्ष है। सहारनपुर में लकड़ी पर खुदाई का काम बहुत सुन्दर होता है जो विदेशों तक जाता है। बाजोरिया अस्पताल, संकीर्तन भवन और जामा मस्जिद देखने योग्य इमारतें हैं। यहां का स्टड ब्रहुत प्रसिद्ध है, जहाँ फौज के लिये घोड़े तैयार किये जाते हैं। यहाँ कपड़ा बुनने, गत्ता, कागज, चीनी और सिगरेट के बड़े-बड़े कारखाने है। मैदा, बर्फ, रेगमाल आदि के भी कई अन्य बड़े कारखाने है। बासमती चावल की बड़ी मंडी हैं। प्रांतीय सरकार इसे इन्डस्ट्रियल स्टेट का रूप दे रही है।

बेहट—इसका प्राचीन नाम वृहदवट था, कहते हैं, यह पुराने समय में बहुत बड़ा व्यापारिक केन्द्र था। लगभग २४०० वर्ष पहिले अपने प्रवास काल में सम्राट चन्द्रगुप्त यहां आकर रहा था यहीं से वह शाकुम्भरी देवी के दर्शनों को जाता था। कुछ लोग कहते हैं कि इसे लोदी बादशाहों के समय बसाया गया था। यहाँ केले और आम के बाग प्रसिद्ध हैं।

तहसील सहारनपुर
تحصیل سہارنپور
गोबिंदपुर
फ़ैज़ाबाद
बादशाही बाग़
जमना नदी
शिवालिक पर्वत
रामपुर
मिर्ज़ापुर
बरकला
शाकुम्बरी
बेहट
कलसिया
संसारपुर
मुज़फ़राबाद
बिहारीगढ़
परगना सरसावा व सुल्तानपुर
सहारनपुर
थाना
कैलासपुर
फ़तहपुर
परगना भगवानपुर
हरौड़ा
गागलहेड़ी
नहर जमन
सादौली
हरिया
टपरी
बलियाखेड़ी
कोटा
चुड़ियाला
पैमाना
परगना रामपुर व नागल
پرگنہ رامپور و ناگل
१ इंच = ८ मील

कैलाशपुर—खाँ साहब नईम खाँ के मकान और बाग देखने योग्य हैं। कुओं के रहट मजबूत और उम्दा बनते हैं।

कोटा—लाला चरणदास का मकान और मन्दिर बहुत बड़े और प्रसिद्ध हैं।

खारा—पूर्वी यमुना नहर और पश्चिमी यमुना नहर का उद्गम है, कोई तीन मील दूर शाहजहाँ बादशाह के समय का लगाया हुआ एक बाग है, जिस में देखने योग्य मकान बने हुये हैं।

शाकुम्भरी—खारा के बादशाही बाग से ८ मील पूर्व की ओर शिवालिक पहाड़ के अंचल में शाकुम्भरी देवी का बड़ा मन्दिर है। यहाँ विजयदशमी से चार दिन बाद चौदस का मेला लगता है।

तहसील रुड़की

रुड़की—फौज की छावनी और अच्छा नगर है। भारत का प्रसिद्ध इन्जनियरिंग विश्वविद्यालय यहाँ है। सोलानी नदी का पुल बाँध कर उसके ऊपर से गंगा की नहर निकाली गई है जो देखने योग्य है। लोहे और लकड़ी के काम का सरकारी कारखाना अर्थात् वर्कशाप भी है।

लकसर—शूगर मिल और जंकशन स्टेशन है।

पीरानकलियर—हजरत साबिर का मजार देखने योग्य है।

तहसील रुड़की
पैमाना
१ इंच = ८ मील
मोहंड
मुज़फ़्फ़राबाद
परगना हरोड़ा व
सोलानी नदी
खेड़ी शिकोहपुर
सकरौदा
भगवानपुर
रतमऊ
चुड़ियाला
इकबालपुर
ज्वालापुर
हरद्वार
बहादराबाद
कलियर
पथरी
कनखल
रुड़की
झबरेड़ा
लंढौरा
मंगलौर
लकसर
सुल्तानपुर
कुनाहरा
रायसी
दरयापुर
परगना देवबन्द व नगर
जि० मुज़फ़्फ़र नगर
जि० बिजनौर
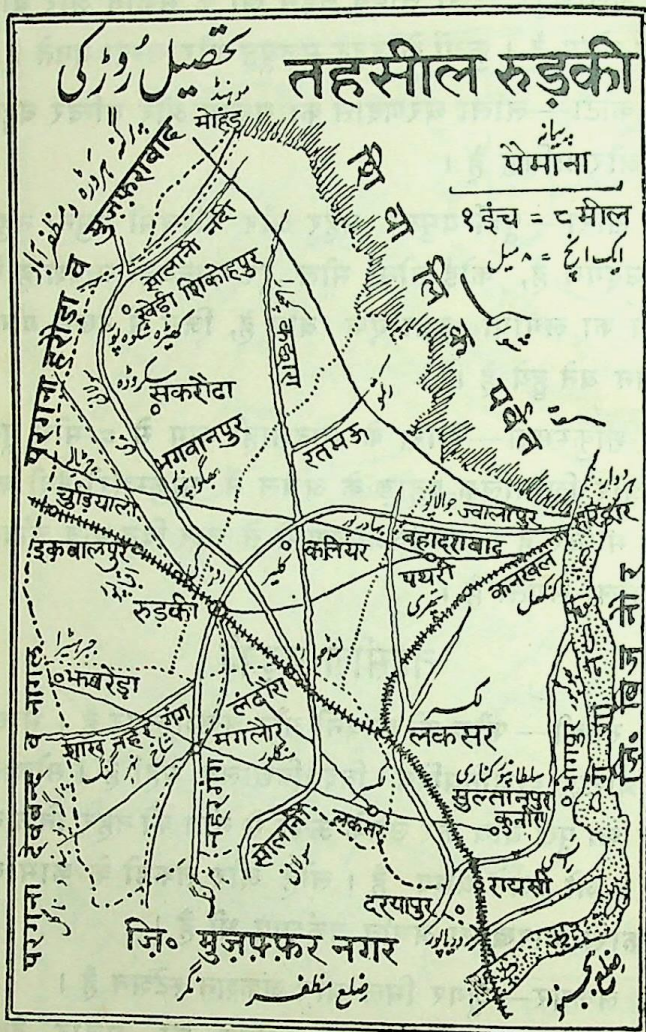
हरिद्वार—हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ है। केदारनाथ में हर (महादेव) जी का मन्दिर है। इस मन्दिर का मार्ग यहाँ से होकर जाता हैं इसलिये इनका नाम हरि का द्वार अर्थात् हरिद्वार है यहाँ के प्रसिद्ध मेलों का वर्णन हम ऊपर कर आये हैं। वैसे तो प्रतिदिन हरिद्वार में यात्रियों का मेला लगा रहता है। हरिद्वार के पास और बहुत से पूजा योग्य व दर्शनीय स्थान हैं। कुशावर्त घाट वह जगह है जहाँ दत्तात्रेय जी ने तपस्या की थी। दूधिया बाँध, हर की पौड़ी का प्लेट फार्म दर्शनीय हैं। चण्डोदेवी, हर की पौड़ी और भीमगोडा विशेष धार्मिक स्थान हैं। श्रवणनाथ का ज्ञान मन्दिर दर्शनीय हैं।

कनखल—यहाँ राजा दक्ष के समय का प्राचीन मन्दिर और रघुवीरसिंह की छतरी देखने योग्य है।

मोहण्ड--अफसर और राजा लोगों के खेलने का बन है।

लंढौरा—एक छोटी रियासत है राजा बलवन्तसिंह के मकान देखने योग्य हैं।

मंगलौर—राजा मंगलसैन ने बसाया था। एक किला था, जिसकी चहार दीवारी और खन्दक अब तक मौजूद हैं। केले के बड़े २ बाग हैं।

बहादराबाद व पथरी—बिजली बनाने के बड़े-बड़े पावर हाऊस हैं। जिनसे दूर-दूर तक बिजली पहुँचाई जाती है।

तहसील नकुड़

नकुड़—इसका असली नाम नकुलपुर था जिसे पाँडव के पुत्र नकुल ने बसाया था, प्रयोग में आने से नकुड़ हो गया। घी की प्रसिद्ध मंडी है।

सरसावा—यहाँ मखदूम साहब का मजार है।

रणदेवा—प्यारे जी की समाधि है।

गंगोह—यहाँ शेख अब्दुल कद्दूस का मजार है। राजा गंग का बसाधा हुआ है। पुराने किले के चिह्न अब तक दिखाई देते हैं। यहाँ बाबा हरिदास की समाधि भी है। गेहूं और घी की मंडी है।

अम्बहटा—यहाँ शाह अब्दुल माली की यादगार है। घी की मण्डी है।

तीतरों—शेखों की अमलदारी के समय में इसका नाम दुरराजपुर था। यहाँ लोहा गलाने का इंजन है और बागों के लिये पौध तैयार करने का काम अच्छा होता है। अब ट्रिप्लाई का कारखाना भी लग गया है।

तहसील देवबन्द

देवबन्द—पहले इसका नाम देवीबन था। देवी का मन्दिर आज भी मौजूद है। प्रयोग में आने से देवीबन का देवबन्द होगया। यहाँ का अरबी मदरसा प्रसिद्ध है। दूर दूर के विद्यार्थी अरबी की शिक्षा पाने के लिये आते हैं। शूगर मिल भी है।
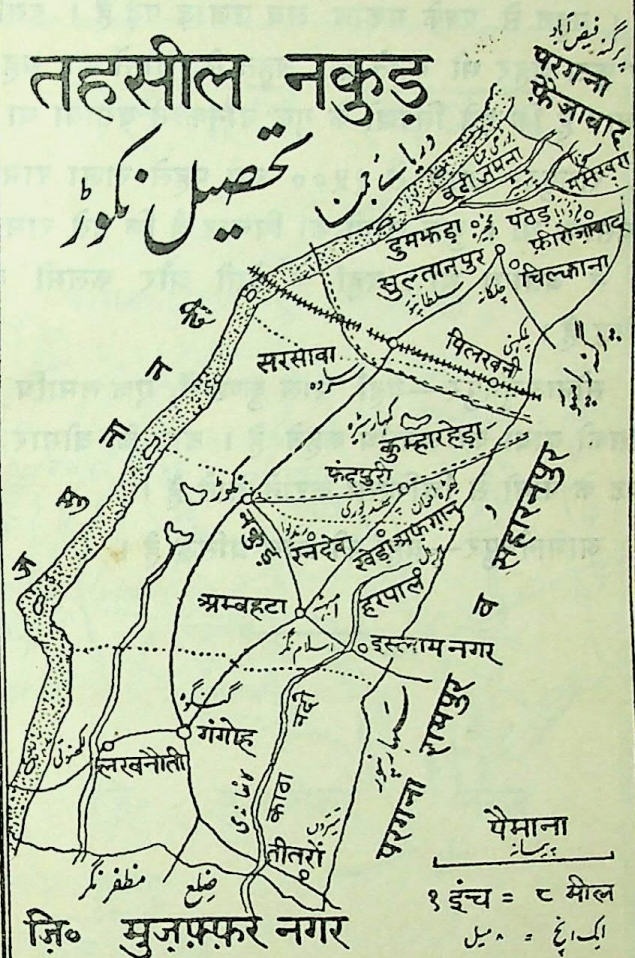
तहसील नकुड़
تحصیل نکوڑ
परगना फ़ैज़ाबाद
बढ़ीजमना
पठेड़
दुमझड़ा
फ़ीरोज़ाबाद
सुल्तानपुर
चिल्काना
पिलखनी
सरसावा
कुम्हारहेड़ा
फंदपुरी
नकुड़
रनदेवा
खेड़ाअफ़गान
अम्बहटा
हरपाल
इस्लाम नगर
सहारनपुर
परगना रामपुर
गंगोह
लखनौती
कठा
तीतरों
पैमाना
१ इंच = ८ मील
ज़ि० मुज़फ़्फ़र नगर

नानौता—नानू नाम के वृद्ध राजपूत ने आबाद किया था। बहुत से पक्के मकान अब उजाड़ पड़े हैं। इसलिये इसे फूटा शहर भी कहते हैं। बहुत से लोगों का यह भी विचार है कि इसे सिक्खों के गुरू नानक ने बसाया था।

रामपुर—आज से १५०० वर्ष पहले राजा रामसिंह ने बसाया था। कुछ लोगों का विचार है कि इसे रामचन्द्र जी ने बसाया था। यहाँ के देसी और कलमी आम प्रसिद्ध हैं।

सोनाअर्जुनपुर—यहाँ माल कुण्ड में एक समाधि है। जिसको बाबा की समाधि कहते हैं। बाय के बीमार इस कुण्ड के पानी से चिकित्सा कराने आते हैं।

आभानैनपुर—यहाँ की झील प्रसिद्ध है।

तहसील देवबन्द
تحصیل دیوبند
परगना सहारनपुर व हरौड़ा
परगना गंगोह
परगना मंगलौर
रामपुर
नानौता
बड़गांव
जड़ौदापांडा
नागल
पहाड़पुर
तलहेड़ी
मकनपुर
देवबंद
राजपुर
कृष्णा नदी
काली नदी
ज़ि० मुज़फ़्फ़र नगर
ضلع مظفر نگر
पैमाना
१ इंच = ८ मील
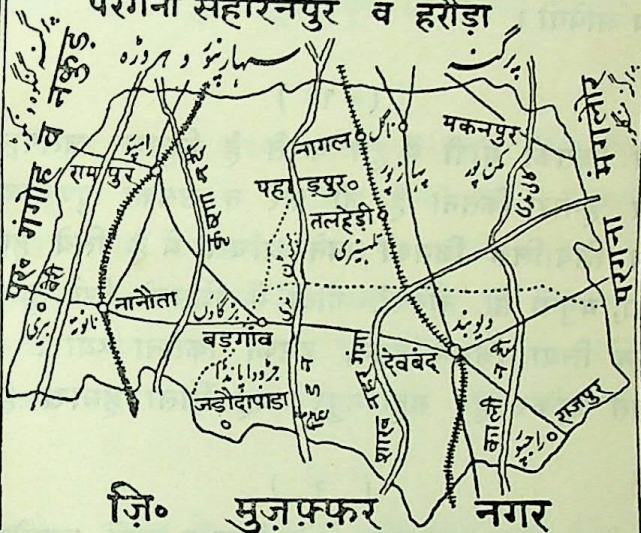
मनोरंजक पद

हमारा जिला

यह कविता तुम्हारे जिले के सम्बन्ध में है। एक ही कविता में जिले का पूरा भूगोल है। मानो गागर में सागर है। गाओगे आनन्द आयेगा, याद कर लोगे काम आयेगी।

(१)

खेले जिसकी गोदी में हम करते हैं जिसका जलपान।
भूल हमारी कितनी है जो करें न उसका गुणगान॥
शैल शिवालिक जिसको अपने आँचल में है लिये हुए।
गंगा, यमुना सी नदियाँ, गोदी में जिसको लिये हुए॥
जन्म लिया जिसमें हमने, हमको कितना प्यारा है।
सबसे बढ़कर हमें सहारनपुर यह जिला हमारा है॥

(२)

रुड़की, नकुड़, सहारनपुर और देवबन्द चारों तहसील।
इनके बने परगने पन्द्रह जिनकी नीचे है तफसील॥
रुड़की में रुड़की, मंगलौर, भगवानपुर और ज्वालापुर।
देवबन्द में देवबन्द है, नागल है और रामपुर॥
गंगा, यमुना की गोदी में, इसका अजब नजारा है।
सबसे बढ़कर हमें सहारनपुर, यह जिला हमारा है॥

(३)

फैजाबाद, मुजफ्फराबाद, हरौड़ा और सहारनपुर ।
चार परगनों से मिल बनती है तहसील सहारनपुर ।।
तहसील नकुड़ में चार परगने नाम हैं जिनके यों मशहूर ।
गंगोह, नकुड़ और सरसावा है चौथा सुलतानपुर ।।
क्या खूब घनी आबादी का कुदरत ने ठाठ सँवारा है ।
सबसे बढ़कर हमें सहारनपुर यह जिला हमारा है ।।

(४)

ऋषिकुल, गुरुकुल, अरबी मदरसा खुली जहाँ शिक्षा की खान ।
दूर-दूर के रहने वाले इनमें पावें विद्यादान ।।
इंजीनियरिंग कालिज रुड़की का भारत में लासानी है ।
सोलानी का पुल क्या है, विज्ञान की एक निशानी है ।।
गंगा, यमुना की नहरों से सींचा जाता सारा है ।
सबसे बढ़कर हमें सहारनपुर यह जिला हमारा है ।।

(५)

साबिर साहब के मजार पर जुड़ता है मेला हर साल ।
शाकुम्भरदेवी का मेला बड़ी नुमायश और गुघाल ।।
हरिद्वार के कुम्भ पर्व का मेला हो बारहवें साल ।
भारत भर से वहाँ पहुँचते लाखों नर नारी उस साल ।।
ऊँचे पर्वत से गंगा की, जहाँ उतरती धारा है ।
सबसे बढ़कर हमें सहारनपुर यह जिला हमारा है ।।

(६)

बाग कम्पनी बड़ी दूर से दिखलाता है अपनी शान।
संकीर्तनभवन व जामा मस्जिद देखो कैसी स्वर्गिक खान॥
पेपर, सिगरेट, गत्ता, कपड़ा शूगर मिलों की है भरमार।
मैदा मिल के है पडौस में, अन्य बहुत से कारोबार॥
व्यापारिक दुनिया को भी तो इसका बड़ा सहारा है।
सबसे बढ़कर हमें सहारनपुर यह जिला हमारा है॥

(७)

कलमी आम बड़े ही मीठे, आला गन्ने और लौकाट।
छोटे-छोटे बालम खीरे, खुदी हुई लकड़ी के ठाठ॥
खास चौक के फव्वारे पर बड़ी किताबों की दुकान।
गोर्धनदास और धर्मदास की मिलता जहाँ सभी सामान॥
भरा हुआ 'संतोष' सब विधि, इसका सब भंडारा है।
सबसे बढ़कर हमें सहारनपुर यह जिला हमारा है॥

अठारहवाँ पाठ

पैमाना और नक्शा

बालको ! तुमने अपनी कक्षा में अपने जिले का मान-चित्र टंगा हुआ देखा होगा। इसे देखने से तुम्हें अपने जिले की नदियाँ, नहरें, पहाड़, मुख्य नगर, कस्बे, ग्राम, रेलवे लाइन, सड़कों और झीलों आदि के स्थान का ज्ञान होसकेगा।

इसलिये हम मानचित्र उसी चित्र को कह सकते हैं जिससे किसी स्थान की सीमा के साथ वहाँ की नदी, पहाड़, जंगल, गाँव आदि का ज्ञान प्राप्त हो सके। केवल सीमा का ज्ञान कराने वाले चित्र को हम खाका कहते हैं। आओ, पहिले खाका खींचना जाने।

मानलो, तुम छोटी-छोटी वस्तुओं का खाका स्लेट, कागज या तखते पर बना सकते हो। परन्तु यदि तुमसे कोई कहे कि अपनी पाठशाला के कमरे का खाका बनाओ तो किस तरह बनाओगे? इतना बड़ा कागज कहाँ से लाओगे? परन्तु घबराने की बात नहीं। आओ हम इसकी सरल विधि बतायें। पहले एक फीता लो। तुम्हारी पाठशाला में फीता अवश्य होगा। यह किरमिच या कपड़े का कोई आध इन्च चौड़ा, पच्चीस-पचास या सौ फिट लम्बा होता है। इस पर इंच १० भागों में और फिटों के चिन्ह बने होते हैं। पीतल या चमड़े की गोल डिबिया में लिपटकर इकट्ठा हो जाता है। जितनी जरूरत हो निकाल कर किसी चीज को नाप लो फिर घुमाने से अन्दर की ओर लिपट जायेगा।

इसी फीते से कमरे की लम्बाई और चौड़ाई को नाप लो। मान लो, तुम्हारा कमरा चौदह गज लम्बा और बारह गज चौड़ा है तो एक इंच को एक गज के बराबर मान लो। अब तुम्हारे कमरे की लम्बाई चौदह इन्च और

चौड़ाई बारह इंच होगी। इसी हिसाब से फीटे के द्वारा कागज पर खाका बनालो। खाके के नीचे लिख दो, पैमाना एक गज बराबर एक इन्च। अब कोई मास्टर या लड़का जिसने तुमको खाका बनाते नहीं देखा, तुरन्त समझ जायेगा कि वास्तव में तुम्हारा कमरा कितना लम्बा और कितना चौड़ा है। इसी प्रकार यदि २०० मील लम्बा और १०० मील चौड़ी सतह का खाका खींचना हो तो कागज की सुविधा देखकर दस मील या बीस मील बराबर एक इन्च के नियत करलो।

इससे जान पड़ा कि जिस हिसाब से लम्बाई और चौड़ाई निश्चय करके खाका बनाते हैं, उसको पैमाना कहते हैं।

इसी प्रकार तुम अपने गाँव अथवा स्कूल का नक्शा पैमाना मानकर बना सकते हो।

अभ्यास के प्रश्न

१—छोटे स्थान पर बड़ी सतह किस प्रकार बनाओगे ?

२—तुम्हारा अहाता कितना बडा था और कागज पर कितना बनाया ?

३—पैमाने से क्या लाभ हैं ?

उन्नीसवाँ पाठ

जिले सहारनपुर का नक्शा बनाना

पिछले पाठ में तुम्हें मानचित्र बनाने की विधि बताई गई है। उसी के आधार पर तुम अपने जिले का नक्शा बना सकते हो। जिले सहारनपुर की लम्बाई पूर्व से पश्चिम की ओर ६६ मील है और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण की ओर ४८ मील है। अब तुम ६ मील प्रति इन्च का पैमाना मान लो। इस प्रकार लम्बाई ११ इन्च और चौड़ाई आठ इंच आती है। अतः एक आयत ११ इन्च लम्बी और आठ इन्च चौड़ी बनाओ और उसमें एक-एक इंच के खाने बनाकर उत्तर की ११ इंच वाली लकीर में ४ इंच दक्षिण की ओर छोड़कर नक्शे में यमुना नदी बनानी आरम्भ करो और नीचे दक्षिण की ओर बढ़ते रहो, इस प्रकार जिले की पश्चिमी सीमा बनाने वाली यमुना नदी बन गई।

अब आठ इन्च वाली पूरब की लकीर में उत्तर की ओर ४ इंच छोड़कर पूरब की ११ इन्च की लाइन के आस पास असली नक्शे की सहायता से गंगा बना दो। इस प्रकार तुम्हारे जिले की दो प्राकृतिक सीमा बन गई।

अब नक्शे को देख देखकर और अपने खाके की सहायता से उत्तर और दक्षिण की सीमायें बनाते चलो।

यदि नक्शे की ऊँच नीच का ठीक ध्यान रक्खोगे तो तुम्हारे जिले का ठीक खाका बन जायेगा।

खाका तैयार होने पर उसके अन्दर दरिया, नदियाँ, सड़कें, रेलें, गाँव, कस्बे, नगर, परगने आदि जो चाहो भर सकते हो। यह याद रक्खो कि जब तक तुम पैमाना नहीं मान लोगे तब तक शुद्ध नक्शा सावधानी के साथ नहीं बना सकोगे। प्रत्येक स्थान पैमाने की नियत की हुई दूरी पर बनाओ। इससे यह लाभ होगा कि बिना नापे तुम बता सकोगे कि एक स्थान दूसरे स्थान से कितनी दूरी पर है।

बिना लम्बाई चौड़ाई का ज्ञान प्राप्त किये तुम कहीं का भी नक्शा नहीं बना सकोगे। इसलिये पहले नाप मालूम करो, और पैमाना नियत करलो फिर नक्शा बनाओ।

देखें तुमने क्या सीखा है:—

१—कितना लम्बा चौड़ा चौखटा इस जिले का नक्शा बनाने के लिये बनाना चाहिये और क्यों ?

२—बिना पैमाने के नक्शे बनाने में क्या २ मुश्किल होती है ?

बीसवाँ पाठ

जिले का ऐतिहासिक गौरव

बालको! हमारे जिले सहारनपुर में ऐसी कई विशेषतायें हैं जो अन्य जिलों में कम है। शिवालिक पर्वत इस जिले के ऊपर ताज के समान शोभित है, गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियों ने इसे अपने मध्य में लेरक्खा है। पर्वतों को छोड़कर यह नदियें पहले इसे जिले में मैदान में बहती है। देश के अनेक प्रमुख नगरों को जोड़ने वाले यहाँ रेल और सड़क के मार्ग बड़े महत्त्व के हैं। गर्मियों में ठंडे पर्वतीय भाग जैसे मसूरी, चकरौता, केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री तीर्थों का मार्ग इसी जिले से होकर है।

विश्व विख्यात् रुड़की का इंजीनियरिंग विश्वविद्यालय, देवबन्द का अरबो विश्वविद्यालय, स्वामी श्रद्धानन्द का गुरुकुल विश्वविद्यालय इसी जिले की शान हैं।

प्रसिद्ध हरिद्वार के कुम्भ, अर्ध कुम्भ, पीरानकलियर और शाकम्भरी के लक्खी मेले यहाँ होते हैं।

इस जिले ने अनेक उच्च कोटि के कवि और लेखक भी उत्पन्न किये हैं। ब्रजभाषा के कवि हितहरिवंश, कहानी-कार विश्वम्भर शर्मा कौशिक इसी जिले के निवासी थे।

श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, अविकसित, कुसुम और अकिंचन जैसे लेखक और कवि भी इसी जिले की शान हैं। स्वतन्त्रता संग्राम में भी इस जिले ने ललताप्रसाद जैसे सेनानी दिये।

वीरों से भी इस जिले की गोद खाली नहीं रही। प्रसिद्ध आक्रमणकारी तैमूरलंग जब देश को रौंदता हुआ मायापुर (हरिद्वार) पहुँचा तो उस समय उस क्षेत्र के सामंत ईसमसिंह सतवांसा एक वीर व्यक्ति थे। तैमूरलंग ने ईसमसिंह से भेंट करते हुए कहा कि मैंने अपने देश में भारत के वीरों की बड़ी कहानियाँ सुनी थी परन्तु मुझे तो ऐसा लगा कि सब भारतीय कायर हैं।

इस बात को सुनते ही ईसमसिंह क्रोध से लाल हो उठे और उन्होंने गरज कर कहा, "तैमूर! तुमने किसी भारतीय को अभी देखा ही नहीं है।" तैमूर भी असावधान नहीं था उसने तुरन्त मंगोल सैनिकों को ईसमसिंह को भालों पर उठाने की आज्ञा दी। विशाल डील डौल वाले मंगोल सेना पति ने अपने तेज भाले पर ईसमसिंह को उपर उठा लिया। शरीर बिंध जाने पर भी इसमसिंह के मुख पर दुख की कोई बात प्रगट नहीं हुई उसने म्यान से तलवार निकाल कर तैमूर और मंगोल पर वार करना चाहा पर वह इतने ऊपर उठ गया था कि नीचे खड़े व्यक्तियों तक तलवार का वार होना कठिन था। शत्रु सामने हो और वह सुरक्षित

खड़ा रहे यह भारतीय वीर पर लांछन था और ईसमसिंह जैसा वीर कब भारतीयया का अपमान सह सकता था, उसने शरीर पर एक जोर का झटका दिया जिससे भाले की लकड़ी उसके शरीर से आरपार होकर वह नीचे को खिसक आया और पलक झपकते झपकते मंगोल सेनापति का सिर धरती पर लोटने लगा। ईसमसिंह का दूसरा हाथ आक्रमण कारी तैमूर पर भी पड़ा पर वह घायल होकर भाग निकला। और यों हमारे जिले का वह सपूत भारत की आन की रक्षा कर हंसता हुआ प्राण छोड़ गया।

कहते हैं, महाराज भृतहरि ने हरिद्वार में गंगा तट पर तपस्या को। उसी स्थान पर महाराज विक्रमादित्य ने हर की पौडी बनवाई। महारानी अहिल्याबाई ने यहाँ कुशावर्त घाट बनवाया और स्वामी श्रद्धानंद ने गुरुकुल कांगडी का महान शिक्षा केन्द्र।

जगदगुरु शंकराचार्य, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, महर्षि दयानन्द भी इस ज़िले में पधारे थे।

बासमती चावल, कलमी ग्राम, मीठा लौकाट, बालम खीरा और सफेद गन्ना इस जिले को उपज में अपने ढ़ग की अनूठो उपज है।

देखें तुमने क्या सीखा है:—

१—अपने जिले की महत्वपूर्ण शिक्षा संस्थाओं के नाम लो।

२—जिले की दो बड़ी नदियां कौन है ?

३—इस जिले ने ब्रजभाषा के कौन कवि दिये ?
४—अपने जिले के किसी वीर का नाम लो ।
५—अपने ज़िले की महत्वपूर्ण उपज के नाम बताओ ।

श्री लक्ष्मी मुद्रणालय, सहारनपुर